Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

RNI No. DELHIN/2008/24416
DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
Customer ID-3000016159

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 15 ❑ वर्ष : 15 ❑ अंक : 3 ❑ मार्च, 2022 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

लाभदायक डेरी फार्मिंग

बछड़ा व बछड़ियों की देखभाल व प्रबंधन

गाय-भैंस या बकरियों में किलनी की समस्या

दुधारू पशुओं में ब्याने की अवधि में होने वाले प्रमुख रोग

AYURVET

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन यदि कुशलता, पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक तकनीक के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 15 | अंक : 3 | मार्च, 2022 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:

आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:

अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय डॉ. तन्मय सिंह, अंकित कुमार एवं प्रिया सोनी

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट "**आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली**" के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- लाभदायक डेरी फार्मिंग 5
- बछड़ा व बछड़ियों की देखभाल व प्रबंधन 11
- पशुओं में रिपीट ब्रीडिंग की समस्या व घरेलू समस्या 14
- दुधारू पशुओं में ब्याने की अवधि में होने वाले प्रमुख रोग 19
- गाय-भैंस या बकरियों में किलनी की समस्या 25
- पशुओं में पैराटयूबरक्लोसिस रोग 29
- दुधारू पशुओं में आहार प्रबंधन 31
- देसी मांगुर मछली का करें उत्पादन, होगी लाखों की आमदनी 34
- बजट 2022-जैविक खेती से गांव-किसान की तकदीर तय करने की कोशिश 39
- कटड़ों में अम्बिलकल हेर्निया या नाभि हेर्निया 43
- सोने के अंडे जितना है भाव अभी शुरू करें कड़कनाथ मुर्गे का व्यवसाय 45

अन्य

- महत्त्वपूर्ण दिवस 27
- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 38
- खोज खबर 35

प्रिय पाठकों,

भारत विविध मौसमों का देश है। मौसमीय विविधताओं का प्रभाव हमारे पशु के उत्पादन क्षमता को प्रभावित करता है। पशु की दूध उत्पादन क्षमता, प्रजनन व स्वास्थ्य प्रभावित होता हैं। ऐसे में मौसम के अनुसार प्रबंधन करना आवश्यक हैं, ताकि पशु स्वस्थ रहें और उत्पादन बना रहे।

किसानों को खेती के लिए उर्वरक उतना ही जरूरी है, जितना की मनुष्य को खाना। ऐसे में उर्वरक क्षेत्र में सरकार एक बड़ा कदम उठा सकती है। दरअसल, उर्वरक में भारत का अगला कदम ''एक राष्ट्र एक उर्वरक'' है। इसका उद्देश्य माल ढुलाई सब्सिडी को कम करना और राज्य में उर्वरकों की 'रियल टाइम' मूवमेंट/उपलब्धता/बिक्री की निगरानी करना और औद्योगिक उद्देश्य के लिए यूरिया के डायवर्जन को रोकना है।

हाल ही में बजट में भी कई योजनाओं के लिए बजट बढ़ाया गया है। इसमें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, किसान उत्पादन संगठनों (एफपीओ) का गठन और संवर्धन, राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन हनी मिशन, प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण योजना, राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना, राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना एवं पशुधन जनगणना और एकीकृत नमूना सर्वेक्षण योजना आदि शामिल हैं। इनकी विस्तृत जानकारी पत्रिका के इस अंक में शामिल की गई है।

पशुपालन के साथ ही मत्स्य पालन भी पशुपालकों के लिए लाभदायक व्यवसाय है। मछलीपालकों के हित में बिहार सरकार ने ''मत्स्य-फसल बीमा योजना'' शुरू की है। इसके अंतर्गत मछली पालक किसान अपनी मछलियों का बीमा करा सकते हैं, जिससे मछली पालन में आकस्मिक क्षति होने पर भरपाई की जाएगी। आप इस योजना का भी लाभ उठा सकते हैं।

अनेक उपयोगी जानकारियां लिए आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका का नया अंक आपके हाथ में है, तो फिर देर काहे कि पत्रिका के नए अंक में शामिल आलेखों को पढ़े और हमें लिख भेजें कि आपको यह अंक कैसा लगा। आपकी प्रतिक्रियाओं का हमे बेसब्री से इंतजार रहेगा।

(अनूप कालरा)

लाभदायक डेरी फार्मिंग

-डॉ जितेंद्र सिंह

कई बार पशु बीमार होते हैं और पशुपालक समझ नहीं पाते हैं, बाद में उन्हें पता चलता है तब तक बीमारी बढ़ गई होती है। इसकी वजह से कई पशुपालकों को आर्थिक रूप से नुकसान भी उठाना पड़ता है। ऐसे में पशुपालन की कुछ बातों का ध्यान रखकर नुकसान से बच सकते हैं। एक किसान के रूप में, आपको अपने पशु में बीमारी एवं स्वास्थ्य के संकेतों को देखने की समझ होनी चाहिए। आपको यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि क्या पशु को अच्छी तरह से खिलाया जा रहा है, और पर्याप्त रूप से स्वच्छ और आरामदायक वातावरण में रखा जा रहा है। आपको यह भी पहचानने में सक्षम होना चाहिए कि कब पशु को उसके आहार से पर्याप्त पोषण नहीं मिल रहा है, या जब वह किसी बीमारी या परजीवी संक्रमण का शिकार हो गया है।

उत्पादन के दृष्टि से पशु स्वास्थ्य का बड़ा महत्व है। एक स्वस्थ पशु से ही अच्छे एवं स्वस्थ बछड़ा-बछिया एवं अधिक दुग्ध उत्पादन की आशा की जा सकती है। केवल स्वस्थ पशु ही प्रत्येक वर्ष ब्यांत दे सकता है। प्रतिवर्ष ब्यांत से पशु की उत्पादक आयु बढ़ती है। इससे पशुपालक को अधिक से अधिक संख्या में बच्चे एवं ब्यांत मिलते है। उसके सम्पूर्ण जीवन में अधिक मात्रा में दूध मिलता है और पशुपालक के लिए पशु लाभकारी होता है।

पशुओं में बीमारी होने के मुख्य कारण

पशु के बीमार होने के कारणों में गलत ढंग से पशु का पालन-पोषण करना, पशु प्रबंध में ध्यान न देना, पशु पोषण की कमी (असंतुलित आहार), वातावरण (मौसम) का बदलना, पैदाइशी रोगों का होना (पैतृक रोग), दूषित पानी, अस्वच्छ एवं संक्रमित आहार लेना, पेट में कीड़ों का होना, जीवाणुओं, विषाणुओं एवं कीटाणुओं का संक्रमण होना, आकस्मिक दुर्घटनाओं का घटित होना आदि प्रमुख है।

रोगी पशु के प्रति पशुपालक का कर्तव्य

बीमार पशु की देखभाल निम्नलिखित तरीके से किया जाना आवश्यक होता है:

क. रोगी पशु की देख-रेख के लिए उसे सबसे पहले स्वस्थ पशुओं से अलग कर स्वच्छ एवं हवादार स्थान पर रखना चाहिए। शुद्ध एवं ताज़ी हवा के लिए खिड़की एवं रोशनदान खुला रखना चाहिए। रोगी पशु को अधिक गर्मी एवं अधिक सर्दी से बचाया जाना चाहिए तथा अधिक ठंडी एवं तेज हवाएं रोगी को न लगने पाए, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

ख. पशु के पीने हेतु ताजे व शुद्ध पानी का प्रबंध करना चाहिए।

ग. पशुशाला में पानी की उचित निकास व्यवस्था होनी चाहिए।

घ. पशु के बिछावन पर्याप्त मोटा, स्वच्छ व मुलायम होना चाहिए।

ङ. पशु को बांधने की जगह पर पर्याप्त सफाई का ध्यान दें तथा मक्खी, मच्छर से बचाव हेतु आवश्यक कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करते रहना चाहिए।

च. रोगी पशु को डराना अथवा मारना नहीं चाहिए तथा पशु को

उसकी इच्छा के विरूद्ध जबरन चारा नहीं खिलाया जाना चाहिए। पशु को हल्का, पौष्टिक एवं पाचक आहार दिया जाना चाहिए। बरसीम, जई, दूब घास एवं हरे चारे तथा जौ का दाना दिया जाना ठीक होता है।

कैसा है आपके पशु का व्यवहार

एक स्वस्थ जानवर अपने परिवेश के प्रति सतर्क और जागरूक हैं। ये देखना होता है कि पशु अपने सिर को ऊपर रखता है और देखता है कि उसके आसपास क्या हो रहा है। वो अच्छे से खड़ा है कि नहीं, अगर कोई पशु दूसरे पशुओं के झुंड से अलग खड़ा है, तो समझिए आपका पशु बीमार है। एक पशु जो अपने परिवेश में दिलचस्पी नहीं रखता है, उसे स्वास्थ्य समस्याएं हैं। बहती हुई नाक या सुस्त आंखें भी बीमारी का संकेत होती हैं।

एक स्वस्थ पशु अपने सभी पैरों पर अपने वजन को संतुलित करते हुए आसानी से और स्थिर रूप से चलेगा। नियमित होना चाहिए। पैरों या अंगों में दर्द के कारण अनियमित लगती है। लेटे हुए पशु के पास जाने पर उसे जल्दी खड़ा होना चाहिए, अगर यह नहीं होता है, तो इससे स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। जब आप देखते हैं कि पशु चलने पर एक पैर का सहारा ले रहा है, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप इसे रोके जब तक कि आपको इसका कारण पता न चले, और प्रभावी ढंग से इसका इलाज करें।

नाक बिना किसी डिस्चार्ज के साफ होनी चाहिए। मवेशी और भैंस के थूथन को सूखा नहीं होना चाहिए। स्वस्थ पशु अक्सर अपनी जीभ से अपनी नाक चाटते हैं। मुंह से कोई लार टपकना नहीं चाहिए। यदि चबाना धीमा या अधूरा है, तो दांतों के साथ कोई समस्या हो सकती है।

क्या आपका पशु चारा खा रहा है?

स्वस्थ पशुओं को भोजन की अच्छी भूख होती है और आमतौर पर वे अपनी संतुष्टि का खाना पसंद करते हैं। बीमार पशुओं को भूख नहीं लगती। स्वस्थ पशुओं की त्वचा साफ, चिकनी और चमकदार होती है। बीमार पशु का शरीर सुस्त दिखता है और बाल बाहर गिरते हैं। ठंडी, शुष्क और झुलसी त्वचा बीमारियों का संकेत देती है। ऐसी त्वचा विकार लक्षण दिखने पर हैं, आपको तत्काल ध्यान देना चाहिए। स्वस्थ मवेशी और उनके बछड़े अपनी त्वचा चाटते हैं और चाट के निशान दिखते हैं। यदि कोई गाय या भैंस अपने पेट पर देखती है या पेट पर लात मारती है, तो पेट में दर्द होता है।

जब पशु आराम कर रहा हो, तब सांस लेना सहज और नियमित होना चाहिए। याद रखें कि चलने-फिरने और गर्म मौसम में सांस लेने की दर बढ़ जाएगी। यदि पशु छाया में आराम कर रहा है, तो सांस लेना मुश्किल है। पशु की जांच करते समय नाड़ी लेना महत्वपूर्ण है। मवेशियों की नब्ज पूंछ के आधार के नीचे एक बिंदु पर ली गई है। एक वयस्क में सामान्य दर 40-80 बीट प्रति मिनट है। भैंस में नाड़ी की दर 40-60 बीट प्रति मिनट होती है। याद रखें कि नाड़ी की दर युवा पशुओं में अधिक होगी। नाड़ी लेने के लिए आपको अपने हाथ की पहली दो उंगलियों के साथ इसके लिए महसूस करना चाहिए।

मल का कोई विचलन यानी बहुत कठोर, बहुत पानीदार, कीड़ा सेगमेंट से दूषित या खून से सना हुआ, स्वास्थ्य को इंगित करता है। यदि आपका पशु अपने स्वयं के शरीर पर शौच करना शुरू कर देता है, तो यह एक संकेत है कि उसे समस्या है और तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। पेशाब का सामान्य रंग हल्का पीला होता है। गहरे पीले रंग का, खून से सना हुआ मूत्र बीमार स्वास्थ्य को दर्शाता है। जब आपका पशु पेशाब करते समय दर्द दिखाता है, तो इसके मूत्र प्रणाली में कुछ गड़बड़ हो सकती है। मूत्र स्पष्ट होना चाहिए, और पशु को पेशाब में दर्द या कठिनाई के कोई लक्षण नहीं दिखाई देने चाहिए।

मवेशी प्रत्येक दिन 6 से 8 घंटे तक जुगाली करते हैं। यह बीमार होने का संकेत है, जब ये पशु जुगाली करना बंद कर देते हैं। दुधारू पशु में, उत्पादित दूध की मात्रा में अचानक परिवर्तन एक स्वास्थ्य समस्या का संकेत दे सकता है। दूध में रक्त या अन्य पदार्थ का कोई भी संकेत, यूडर में संक्रमण का संकेत देता है। छूने पर सूजन और दर्द का कोई संकेत नहीं होना चाहिए। थन पर चोट नहीं होनी चाहिए। जब कोई पशु लगातार खांसता है, तो इसका मतलब है कि कोई चीज उसके गले में जलन कर रही है। लगातार या पुरानी खांसी जरूरी रूप से बीमार होने का संकेत नहीं है। स्वस्थ पशुओं में दर्द का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता। जब पशु अपने दाँत पीसने या कराहने से दर्द के लक्षण दिखाने लगते हैं, तो यह एक संकेत है कि कुछ गलत है।

कैसे पहचाने बीमार पशुओं के लक्षण

बीमारी को पहचानना व उसकी रोकथाम करने के लिए सबसे जरूरी है बीमार पशु की पहचान करना। इससे किसान को दो फायदे होंगे एक तो बीमारी फैलेगी नहीं, क्योंकि बीमार पशु को बाकी पशु से अलग करके ऐसा किया जा सकता है और दूसरा फायदा होगा जल्दी पता चलने से इलाज भी जल्दी शुरू होगा, जो पशु के जल्दी स्वस्थ होने के लिए लाभदायक रहेगा।

कुछ ऐसे लक्षण होते है, जिन्हें आराम से किसान देख के पता लगा सकते है कि पशु बीमार है या स्वस्थ। लक्षणों को देखकर यह भी बताया जा सकता है कि पशु को शरीर में कौन-से हिस्से में तकलीफ है। लक्षण व उनका विवरण कुछ इस प्रकार हैं-

- बीमार पशु सबसे अलग, सुस्त और झुंड से अलग खड़ा मिलेगा। यह एक ऐसे लक्षण होता है जो सब बीमारियों में न भी मिलें।
- बीमार पशु दाना, हरा चारा व तुड़ी कम खाता है। इस लक्षण को पहचानने के लिए किसान को चाहिए कि वह हिसाब रखे कि कितना चारा डाला और कितना बचा हुआ रहा, ताकि यह अंदाजा लगाया जा सके कि पशु ने कितना खाया। ऐसा नहीं है कम खाना ही बीमारी का अन्देशा देता है, बल्कि जब पशु सिर्फ दाना खाता है और तूड़ी नहीं खाता, तब भी वो कीटोसिस बीमारी से पीडित हो सकता है। कई बीमारियाँ ऐसी भी होती है, जिसमें पशु के आहार में कोई भी गिरावट नहीं आती है, परन्तु वो फिर भी कमजोर होता जाता है जैसे दस्त, चबाने या निगलने में तकलीफ। पशु का कम खाना/चबाने में तकलीफ होना दाँतों में समस्या का अन्देशा देता है और कई बार पशु के मुँह में भी चारा मिलता है या बीच-बीच में पशु चारा चबाना बंद कर देता है ऐसी अवस्था में पशु को दिमागी समस्या होने का अन्देशा होता है। निगलने में पशु दर्द महसूस करे या मुँह से आधा चबाया हुआ चारा बाहर निकाले तो यह संकेत होते है कि पशु के गले में इन्फेक्शन या कोई चोट है, जो गलत ढंग से नाल देने की वजह से भी हो सकता है या कोई नुकीले चीज के गले में अटके होने से भी हो सकता है।
- गोबर का पतला होना या बन्धा लगना भी पशु के बीमारी का एक मुख्य लक्षण होता है। स्वस्थ पशु 10 से 16 बार गोबर कर सकता है, परन्तु अगर गोबर पतला और पानी की तरह और इससे ज्यादा बार करे तो यह बीमारी का लक्षण होता है। दस्त लगना पशु में बैक्टीरियल, वॉयरल या पैरासिटिक बीमारी का संकेत होता है। दस्त का रंग, उसमें खून का होना, बदबू का आना अलग-अलग बीमारियों के होने का अन्देशा देता है जैसे कि अगर गोबर में खून आ रहा है या खूनी दस्त लगे है तो यह कॉक्सीडीओसिस होने के संकेत हो सकते है, जिसकी पुष्टि गोबर की जाँच कराकर किया जा सकता है। ऐसे ही सफेद रंग के पानी जैसा दस्त आना इकॉली से होने वाली बैक्टीरियल बीमारी

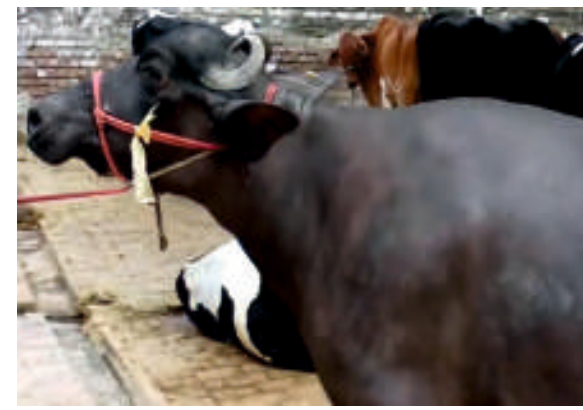

के संकेत होते हैं।

- पेशाब को देख के भी बीमारी का अंदाजा लगाया जा सकता है जैसे अगर पेशाब में खून आ रहा है, तो यह तीन कारण से हो सकता है बबैसिओसिस नाम के रोग में भी पेशाब का रंग लाल होगा इसके साथ पशु को बुखार मिलेगा और चीचड़ भी शरीर पर होंगे या पहले से लगे हुए होंगे। खून की जाँच करा कर बबैसिओसिस की पुष्टि की जा सकती है। Post Parturient Haemoglobinuria में भी पेशाब का रंग लाल हो जाता है पर इसमें पशु को बुखार नहीं मिलेगा साथ ही इसमें फास्फोरस की कमी मिलेगी। फॉस्फोरस के लेवल की जाँच करवाकर रोग की पुष्टि की जा सकती है। किडनी के रोगों में भी पेशाब का रंग लाल हो जाता है और पथरी की समस्या हो तो पशु बार-बार और जोर लगाकर पेशाब करता है। ऐसे में पेशाब की जाँच करवाकर या अल्ट्रासाउंड करवाना चाहिए। पेशाब का रंग अधिक पीला होना भी जिगर की बीमारी होने का लक्षण है।
- पशु को ज्यादा ठंडा पसीना आना भी बताता है कि वह दर्द में है और इसके साथ किसान देखते है कि पशु बार-बार उठक-बैठक करेगा। पसीने का गर्म होना भी यह बताता है कि पशु को बुखार है।
- पशु की आँख की परत (झिल्ली) को देखकर बीमारी का पता लगाया जा सकता है। पशु में खून की कमी में आँख की झिल्ली का रंग फीका पड़ जाता है जैसे (theileriois, babesiosis) चीचड़ से होने वाली बीमारी का अन्देशा होता है। पशु की आँख का रंग पीला पड़ना पीलिया होने की सम्भावना जताता है। बैक्टीरियल इन्फेक्शन में यही झिल्ली का रंग अधिक लाल हो जाता है।
- पशु के आँख, नाक व बच्चेदानी से रेशा या मवाद आना भी बीमारी होने के संकेत होते है। नाक से अधिक पानी, रेशा, बुखार होना व खांसी करना पशु में निमोनिया होने के लक्षण होते है। बच्चेदानी से मवाद आना बच्चेदानी में इन्फेक्शन होने के लक्षण होते है। ऐसे में न तो पशु दोबारा गर्मी में आता और साथ ही दूध उत्पादन में भी गिरावट आ जाती है इस अवस्था में पशु को अति तीव्र बुखार मिलेगा।
- पशु को उठने-बैठने में व पानी पीने के लिए झुकने में दर्द का अहसास होना भी बीमारी के लक्षण होते हैं।

व्यावहारिक लक्षण

किसी पशु के व्यवहार में किसी भी तरह का बदलाव आना जैसे कि पशु का अति सक्रिय, सुस्ती या किसी अन्य असामान्य लक्षण जैसे कि अत्यधिक सिर हिलाने, खरोंच करना(मारना) या शरीर के कुछ हिस्सों का काटना भी बीमारी के लक्षण होते है।

श्वसन की दर और जिस तरह से पशु साँस लेते हैं वह भी बीमारी के बारे में बता सकते है। इसके अलावा, दर्द या संक्रमण के साथ श्वास अधिक तेजी से हो जाता है।

थोड़ा बढ़ा हुआ पल्स दर दर्द का सुझाव देती है, जबकि एक तेज पल्स से बुखार का पता चलता है। एक अनियमित पल्स दिल की समस्या का संकेत कर सकता है।

रोगी पशु की देखभाल

रोगी पशु की चिकित्सा में उनकी उचित देखभाल व रख-रखाव का विशेष महत्व होता है। बिना उचित रख रखाव व देखभाल के औषधि भी कारगर नहीं होती है। पशु के सही प्रकार के रख-रखाव एवं पौष्टिक चारा देने से उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है और पशु स्वस्थ रहता है। पशुओं के स्वस्थ रखने के लिए पशुपालकों को निम्नलिखित बातों का

विशेष ध्यान रखना चाहिए:-

क. सफाई तथा विश्राम व्यवस्था: पशु के रहने के स्थान, बिछावन, स्वच्छ हवा एवं गंदे पानी की निकासी तथा सूर्य के प्रकाश की अच्छी व्यवस्था हो। बीमार पशु को पूरा विश्राम दें तथा उसके शरीर पर खरहरा करें, जिससे गंदगी निकल सके।

ख. समुचित आहार (चारा व दाना): बीमार पशु को चारा-दाना कम मात्रा में तथा कई किश्तों में दें। पेट ख़राब होने पर पतला आहार दें। आहार का तापक्रम भी पशु के तापमान से मिलता-जुलता हो। रोगी पशु को बुखार में ज्यादा प्रोटीनयुक्त आहार न दे।

रोगी पशुओं का आदर्श आहार

क. भूसी का दलिया–गेहूं की भूसी को उबालने के पश्चात् ठंडा करके इसमें उचित मात्रा में नमक व शीरा मिलाकर पशु को दिया जा सकता है।

ख. अलसी व भूसी का दलिया–लगभग 1 किलोग्राम अलसी को लगभग 2.5(ढाई) लीटर पानी में अच्छी तरह उबालकर व ठंडा करके उसमें थोड़ा-सा नमक मिलाकर पशु को देना चाहिए।

ग. जई का आटा–1 किलो ग्राम जई के आटे को लगभग 1 लीटर पानी में 10 मिनट तक उबालकर धीमी आंच में पकाकर इस दूध अथवा पानी मिलाकर पतला करके उसमें पर्याप्त मात्रा में नमक मिलाकर पशु को दिया जाता है। जई के आटे के पानी में सानकर इसमें उबलता पानी पर्याप्त मात्रा में मिलाकर, जब ठंडा हो जाए, तो उसे भी पशु को खिलाया जा सकता है।

घ. उबले जौ–1 किलोग्राम जौ को लगभग 5 लीटर पानी में उबालकर उसमें भूसी मिलाकर पशु को खिलाया जा सकता है।

ड. जौ का पानी–जौ का पानी लगभग 2 घंटे उबालकर तथा छानकर तैयार किया जाता है, यह पानी सुपाच्य एवं पौष्टिक होता है। इसके अतिरिक्त, रोगी पशु को हरी बरसीम व रिजका का चारा तथा चावल का मांड आदि भी दिया जा सकता है।

पशु रोग के कारण

- अच्छी नस्ल का पशु न होना।
- सही रख-रखाव और प्रबंधन न होना।
- संतुलित पशु आहार की जानकारी न होना।
- गाँव में या आसपास अच्छे पशुचिकित्सक न मिलना।
- पशु रोगों के प्रति जानकारी का अभाव होना।
- समय समय पर उचित टीकाकरण नहीं करवा पाने से पशु में दूध घट जाता है।
- पशुओं में कही तरह के रोग होते हैं और सभी रोगों के लक्षण भी अलग अलग तरीके के होते है। इनकी पहचान करने के लिए हमें चिकित्सक की आवश्यकता होती है। चूंकि गाय/भैस बोल कर तो नहीं बता पायेगी कि उसको बुखार/जुकाम या पेट दर्द है, लेकिन यदि आप थोड़ी सी सतर्कता रखें, तो पता चल जायेगा कि पशु बीमार है।

दुधारू पशुओं के लिए टीकाकरण सारणी

क्र.	उम्र	टीका
1.	चार माह	मुँह व खुर रोग टीका-पहला डोज
	2-4 सप्ताह बाद	मुँह व खुर रोग टीका-दूसरा डोज
	साल में 2 या 3 बार (उच्च रोगग्रस्त क्षेत्रों में)	मुँह व खुर रोग टीका- बूस्टर
2.	छः माह	एन्थ्रैक्स टीका
		ब्लैक क्वार्टर टीका
3.	छः माह बाद	हेमोरेजिक सेप्टीकेमिया टीका
4.	वार्षिक	बी.क्यू, एच.एस व एन्थ्रैक्स

□□

पशुचिकित्सा अधिकारी
कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश

AYURVET

GES ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स
तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

बछड़ा व बछड़ियों की देखभाल व प्रबंधन

-डॉ. पूजा गवई[1] और डॉ. आर के बघेरवाल[2]

किसानों के लिए नवजात बछड़े/बछिया किसी धन से कम नहीं होते। इसलिए इनका उचित देखभाल करना बहुत जरूरी है। आपको जानकर हैरानी होगी कि अधिकतर बछड़े/बछिया तो जन्म लेने के कुछ ही समय बाद ही मर जाते हैं। इससे पशुपालकों को नुकसान होता है। इनके मरने का एक बहुत बड़ा कारण किसानों में जानकारी का अभाव का होना भी है। चलिए आज हम आपको बताते हैं कि कैसे आप उनकी अच्छी देखभाल करके भविष्य के लिए उन्हें अच्छी गाय या भैंस बना सकते हैं।

किसी भी डेरी फार्म की सफलता के लिए बछड़े का उचित प्रबंधन एक शर्त है। प्रारंभिक जीवन में पोषण तत्व का स्तर तेजी से विकास और जल्दी परिपक्वता का पक्षधर है। हमें बछड़े व बछड़ियों के लिए अच्छा आहार और प्रबंधन देना चाहिए, ताकि वे अच्छी तरह से विकसित हो सके। लाभ प्राप्त करने के लिए बछड़ों को सावधानी से पाला जाना चाहिए, ताकि वे युवावस्था में परिपक्व शरीर के वजन का लगभग 70-75 प्रतिशत प्राप्त कर सके।

प्रारम्भिक प्रबंधन

1. जन्म के तुरंत बाद नाक और मुंह से किसी भी श्लेष्म या गंदगी को हटा दें।

2. आमतौर पर गाय बछड़े को जन्म के तुरन्त बाद चाटती है।

यह प्रक्रिया बछड़े को सुखाने, सांस लेने और परिसंचरण को तेज करने में मदद करती है। यदि किसी स्थिति में गाय बछड़े को न चाटे या ठण्डी जलवायु में हो, तो बछड़े को सूखे कपड़े या बोरी से रगड़कर सुखाएं। हाथों से छाती को सिकोड़कर और आराम से कृत्रिम श्वसन प्रदान करें।

3. नवजात बछड़े को पैदा होते ही उसकी नाभि को नाभि सूत्र से 5 से 6 इंच की दूरी पर नये ब्लैड से काट के अलग कर देना चाहिए और कटे हुए भाग में ऊपर से 5 से 6 सेंटीमीटर की दूरी पर कपड़े की पट्टी से बांध देना चाहिए तथा टींचर आयोडीन सूशन उसके नाभि पर लगाना चाहिए।

4. बछड़े व बछड़ियों को साफ और सूखी स्थिति में रखें।

5. बछड़े का वजन रिकॉर्ड किया जाना चाहिए।

6. गाय के थन को क्लोरीन के घोल से घोकर सुखा लें।

7. बछड़े को माँ का पहला दूध यानी कोलेस्ट्रम दे।

बछड़ों को खिलाना

सबसे पहले बछड़े को गाय का पहला दूध यानी कोलेस्ट्रम पहले 3 दिनों तक पिलायें। कोलेस्ट्रम मोटा ओर चिपचिपा पीला क्रीम रंग का होता है। इसमें पोषक तत्व और एंटीबॉडी की उच्च सांद्रता होती हैं। कोलेस्ट्रम की थोड़ी मात्रा बछड़े में पोषण संबंधित जरूरतों को पूरा करती है। बछड़ों का पाचन तंत्र बहुत छोटा होता है और कोलेस्ट्रम अपने तत्वों पोषक तत्वों को बहुत ही कम मात्रा में केंद्रित करता है। यह मल को प्रोत्साहित करता है, जिसे म्यूकोनियम कहा जाता है।

इसमें विटामिन ए के उच्च अनुपात और प्रोटीन शामिल हैं। प्रोटीन प्रतिरक्षा ग्लोब्युलिन है जो कई बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। एक महीने की उम्र के बाद बछड़े को स्टार्टर दें। तीन महीने बाद से अच्छी गुणवत्ता वाला हरा चारा और घास प्रदान करें। बछड़ों को एंटीबायोटिक्स खिलाने से भूख में सुधार होता है। विकास दर मे वृद्धि होती है और यह बछड़े के दस्त को रोकता है।

प्रबंधन

- जन्म के बाद बछड़े की पहचान के लिए टैग लगाना चाहिए। कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करके कृमि को दूर करने के लिए नियमित रूप सें बछड़े को कीटाणुरहित करें। 30 दिन के अंतराल पर बछिया को कृमिनाशक दवा जरूर दें।
- दो-तीन सप्ताह के बाद से बछिया को ताजा पानी दिया जाना चाहिए।
- बछड़ों को अलग बाड़े मे रखना चाहिए तथा 3 महीने बाद

समूह में रखे। 6 महीने के बाद नर और मादा बछड़ों को अलग-अलग रखा जाना चाहिए। बछड़ों को साप्ताहिक अंतराल पर 6 महीने तक और मासिक अंतराल पर विकास दर जानने के लिए वजन को तोले।

- 8-9 सप्ताह की आयु में नर को बाधियाकरण करना चाहिए।
- फंगल इंफेक्शन से बचने हेतु शरीर को साफ व सुखा रखें।
- बछड़े को खनिज चटायें, ताकि खनिज की कमी न हो।
- बछड़ों को संक्रामक रोगों से बचाने हेतु टीकाकरण करवाना चाहिए। कुछ रोग ऐसे होते हैं, जिनका कोई उपचार नहीं होता है ऐसी स्थिति में उपचार से बचाव का रास्ता श्रेष्ठ होता है।
- संक्रामक रोगों से पीड़ित पशु की चिकित्सा भी अत्यंत मंहगी होती है। उपचार के लिए पशु की चिकित्सा भी गाँव में आसानी से नहीं मिल पाती है। इन रोगों से पीड़ित पशु को उपचार करने से भी जीवित बच पाते हैं, तो भी उनके उस ब्यांत के दूध की मात्रा में अत्यंत कमी हो जाती है। इससे पशुपालकों को आर्थिक हानि होती है।
- संक्रामक रोगों में रोकथाम के लिए आवश्यक है कि पशुओं में रोग प्रतिरोधक टीके निर्धारित समय के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष लगवाएं जाएं। बछिया व बछड़ों की बेहतर देखभाल और प्रबंधन से डेरी फार्म को उच्च गुणवत्ता वाला पशु मिलेगा।

□□

1. तकनीकी सहायक, 2. प्राचार्य,
वेटरनरी पॉलीटेक्निक महाविद्यालय महू (म.प्र.)

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

500 मि.ली. 1 लीटर

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

पशुओं में रिपीट ब्रीडिंग की समस्या व घरेलू उपचार

-डॉ ज्ञानसागर कुशवाहा[1], डॉ गायत्री सिंह[1] डॉ चेतना शर्मा[1]
डॉ विजय कुमार गोंड[2] एवं डॉ. दीपिका डी. सीज़र[3]

प्रजनन सम्बंधित समस्या डेरी में उत्पादन की कमी का एक प्रमुख कारण हैं। प्रजनन विकारों के कारण डेरी में प्रतिवर्ष पशुओं की संख्या कम हो रही है, एक प्रबंधित डेरी में 10 प्रतिशत से ज्यादा प्रजनन समस्याएं चिंता का विषय हैं,जिसका शीघ्र ही निदान एवं उपचार अनिवार्य हैं। एक पशु से सामान्यतः एक बच्चा प्रतिवर्ष होना चाहिए, परन्तु सही प्रबंधन एवं देखरेख ना होने के कारण किसान भाईयों के लिए यह एक सपना ही रह जाता है। पशुओं में पाई जाने वाली मुख्य प्रजनन समस्याओं में पाई जाती है--रिपीट ब्रीडिंग की समस्या।

रिपीट ब्रीडिंग सामान्य भाषा में जिसे मादा पशु का फिरना भी कहते हैं। जब गाय, भैंस आदि पालतू पशु तीन या तीन से अधिक बार प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान कराने के बाद भी पशु गाभिन होने में असफल रहते हैं या जब मद चक्र सामान्य हो लेकिन प्रजनन मार्ग में किसी भी प्रकार की रूकावट हो या इस प्रकार के पशुओं को दो से तीन बार गर्भाधान कराने पर भी वह गाभिन होने में असफल हो। तब इसे रिपीट ब्रीडिंग या मादा पशु का फिरना कहते है। पशुओं में रिपीट ब्रीडिंग (फिरने) की समस्या प्रजनन में बड़ी बाधा है।

पशुओं में फिरने की समस्या का प्रमुख कारण रोगजनक माना

सिस्टिक ओवेरियन डिजनेरेशन (अंडेदानी में गांठ)

यह बीमारी संकर नस्ल के दुधारु पशुओं में अधिक देखी जाती हैं, जिसके निम्नलिखित कारण हैं:-

- प्रायः तीसरे से पांचवे ब्यांत में ज्यादा होती है।
- फफूंद वाला चारा खिलाने से।
- यह बीमारी आनुवांशिक भी होती है।
- इस बीमारी में पशु बार-बार लम्बे समय तक गर्मी में आता है या कई बार लम्बे समय तक गर्मी में नहीं आता हैं।
- इस बीमारी के निदान तथा रोगोपचार के लिए पशु चिकित्सक से सलाह ले।
- समय रहते अगर उपचार नहीं, करवाया तो यह स्थाई बाँझपन का कारण हो सकता हैं।

पशुओं का गर्मी में ना आना (एनाईस्ट्रस)

एक नियमित अतंराल पर ऋतुकाल के संकेत का अभाव एनाईस्ट्रस कहलाता हैं। पशुओं में इसके निम्न कारणों से हो सकते हैं:-

जन्म के समय जननांगों में विकृति या आनुवांशिक बाँझपन जैसे डिम्ब ग्रंथि में विकासरोध, बच्चेदानी की ग्रंथियों को अविकसित होना इत्यादि। यह विकार पशु चिकित्सक द्वारा पशु की जाँच कराने पर पता चल सकता हैं तथा इस स्थिति में कोई भी रोगोपचार प्रबंधन उपयोगी नहीं हैं।

यौवनारंभ से पूर्व, गर्भित पशु, ब्यांत के 40 से 60 दिन तक तथा बुढ़ापे में पशु ऋतुकाल के संकेत नहीं देता है। इस सम्बंध में किसी भी उपचार की आवश्यकता नहीं है।

संतुलित आहार की कमी से भी पशु गर्मी में नहीं आते हैं। विटामिन एवं खनिज विभिन्न प्रजनन कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, इनकी कमी से विभिन्न प्रजनन समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए पशु को संतुलित आहार के साथ-साथ खनिज मिश्रण अवश्य देना चाहिए। पशुओं को नियमित समय पर कीड़े मारने की दवाइयां अवश्य दें।

शरीर प्रजनन सम्बंधित हार्मोन का स्राव न होने अथवा देरी से होने के कारण भी पशु गर्मी में नहीं आता है।

कई बार पशुओं में ऋतुकाल की अवधि छोटी होने पर या ऋतुकाल के संकेत ठीक ढंग से ना दिखाने पर गर्मी का पता नहीं चल पाता हैं और इसे साइलेन्ट हीट या 'अप्रत्यक्ष ईस्टन्न्स' या मूक गर्मी कहते हैं। यह समस्या गर्मियों में भैसों में अधिक पाई जाती हैं। इस समस्या से निजात पाने के लिए नर पशु को मादा के साथ रखना चाहिए या फिर ''टीजर बुल'' (नसबन्दी वाले सांड़) का प्रयोग करना चाहिए।

गर्भाशय में संक्रमण के कारण कार्पस ल्युटियम का अण्डदानी में बना रहना, इस रोग की पहचान हैं, पशुचिकित्सक द्वारा 10-12 दिन के अन्तराल पर दो बार पशु के जननांगों की जाँच से हो सकती है तथा रोगोपचार के लिए पी. जी. एफ. 2 एलफा ग्हार्मोन (वेटमेट/प्रगमा आदि) का टीका उस मांस में लगवाना चाहिए।

जाता है। रोगजनक कारकों में कुछ संक्रामक कारक जैसे कि जीवाणु, विषाणु, कवक एवं कुछ परजीवी भी होते है। पशु फिरने के कुछ अन्य कारण जैसे डिंबवाही नलिका में अवरोध, कभी-कभी आनुवंशिक कारक भी शामिल हो सकते हैं। पोषण कारक भी जवाबदार होते है। कुछ प्रजनन प्रबंधन तकनीक भी हो सकती है।

किसान के द्वारा पशु को गर्मी में आने के समय पर नहीं देख पाना और सही समय पर प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान न करना सभी प्रमुख कारण हैं।

कृत्रिम गर्भाधान में वीर्य की गुणवत्ता का सही न होना या तो निषेचन का विफल होना या भ्रूण की प्रारंभिक अवस्था में मृत्यु होना आदि समस्याएं भी फिरना का कारण बनती हैं। प्रजनन में भाग लेने वाले या सहायता करने वाले हॉर्मोन की कमी या उनकी अधिकता से भी फिरना की समस्याएं होती हैं। जैसेकि पशु जब गर्मी में आता है तब अंडोत्सर्ज होता है, अंडोत्सर्ज के लिए लूटिनीज़िंग हॉर्मोन का स्तर बढ़ना जरूरी होता है।

यदि ऐसा नहीं होता है, तो अंडोत्सर्ज की प्रक्रिया सफल नहीं

हो पाती। अण्डोत्सर्ग के बाद, यदि शुक्राणु डिंबवाहिनी में रहते हैं, तो निषेचन की प्रक्रिया होती है। उसके बाद भ्रूण का बनना प्रारंभ होता है, जिसे सफल गर्भाधान कहते है। सफल गर्भाधान के लिए प्रोजेस्ट्रोन हॉर्मोन का एक निश्चित स्तर होना आवश्यक है यदि प्रोजेस्ट्रोन हॉर्मोन का स्तर कम होता है, तो गर्भाधान ज्यादा समय तक नहीं रह पाता और गर्भपात हो जाता है और यह भी पशु के दोहराव का एक प्रमुख कारण है।

प्रसव के बाद गर्भाशय की गुहा का वातावरण वायुवीय और अवायुवीय जीवाणु के विकास में समर्थन करता है जैसे. एस्चेरिचिया कोलाइ, आर्कनोबैक्टीरियम पाइोजेन्स, फ्युजोबैक्टीरियम नेक्रोफोरम और प्रीवोटेला प्रजातियां गर्भाशय का रक्षा तंत्र इन जीवाणु संदूषकों को खत्म करने में मदद करता हैं। लेकिन ये रोगजनक जीवाणु गर्भाशय की म्यूकोसा भेद कर अंदर प्रवेश कर सकते है और उपकला में प्रवेश करते हैं। वहां पर ये जीवाणु विषाक्त पदार्थों को छोड़ते हैं। ये विषाक्त पदार्थ गर्भाशय रोग के लिए जबावदार होते है।

गर्भाशय में संक्रमण की स्थिति में पशु के गर्भधारण करने की संभावना कम होती जाती है और पशु बार-बार गर्मी में आता रहता है। लेकिन पशु गाभिन होने में असफल रहता है। प्रसवोत्तर की प्रारंभिक अवधि में संक्रमित गायों में आमतौर पर प्रजनन की दर कम हो जाती है।

गाय या अन्य पशुओं की प्रजनन वाहिका ऊसाइट की वृद्धि, शुक्राणु परिवहन, निषेचन और आरोपण के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। इन अंगों के शारीरिक या कार्यात्मक दोष होने पर गर्भावधि विफलता और बार-बार प्रजनन का कारण बनते है। पशुओं में अक्सर देखा गया है कि डिम्बग्रंथि में सिस्ट विकसित होने लगता है। यह सिस्ट भी प्रजनन विफलता का कारण होते हैं। पशुओं की प्रजनन क्षमता में उम्र की एक निश्चित भूमिका होती है। अधिक उम्र वाली गायों में बार-बार प्रजनन की घटनाएं अधिक देखने को

पशुओं का बार-बार फिरना (रिपीट ब्रीडिंग) प्रमुख कारण

रिपीट ब्रीडिंग में गाय बिल्कुल सामान्य होती है, परन्तु तीन या अधिक बार गर्भाधान सेवाओं के बाद भी गाभिन होने में असफल होती हैं। ऐसे पशु समयानुसार गर्मी में आते तथा इनका जननांग सामान्य होता है। रिपीट ब्रीडिंग निम्न कारणों से हो सकती है:-

- अंडाणु का उत्सर्जन ना होना या देरी से उत्सर्जित होना।
- अंडाणु का वृद्धि होना।
- मादा पशु में प्रजनन सम्बंधी हार्मोन की कमी।
- बच्चेदानी में संक्रमण या सूजन।
- संतुलित आहार की कमी।
- वीर्य या नर पशु में खराबी।
- कृत्रिम गर्भधारण के समय वीर्य को सही समय व समुचित स्थान (मादा जननांग) पर न छोड़ा जाना।

इस रोग के प्रबंधन के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें –

- जब भी मादा पशु गर्मी में आए उसके 10 घंटे बाद ही गर्भधारण करवाएं या नर पशु से मिलवाएं ।
- पशु को संतुलित आहार एवं खनिज मिश्रण नियमित रुप से प्रदान करें।
- उत्तम स्तर का वीर्य ही गर्भाधान के लिए प्रयोग करें।
- यदि बच्चेदानी में संक्रमण या सूजन हो तो पशु को एंटिबायोटिक का टीका लगवायें।

गर्भाशय में संक्रमण

कामोत्तोजना और प्रसव के समय संक्रमण गर्भाशय में प्रवेश करता हैं, रक्त के माध्यम से संक्रमण का गर्भाशय में प्रवेश करने की संभावना कम ही होती है। प्रसव के बाद गर्भाशय में संक्रमण हो तो पशु उदासी के लक्षण, भूख की कमी, बुखार, कमजोरी इत्यादि लक्षण दिखाता हैं, योनि मार्ग से पीला बदबूदार मवाद स्रवित होता है।

प्रसव के प्रथम 4 हफ्ते में संक्रमण गर्भाशय के ऊपरी स्तर पर रहता है और इसे ''एंडोमेट्राइटिस'' कहते हैं। इस बीमारी में कामोत्तोजना सामान्य होती है, पर पशु रिपीट ब्रीडर बन जाता हैं। इसलिए बाँझपन या प्रजनन समस्याओं के कारणों का निर्धारण करने के लिए बाँझ पशुओं की जाँच पशु चिकित्सक से अवश्य करवाएं।

भ्रूण की मृत्यु

- गर्भकाल की किसी भी अवस्था में भ्रूण की मृत्यु हो सकती है।
- गर्भकाल के छठे से 18वें दिन तक 45 प्रतिशत भ्रूणीय क्षय होने की प्रबल संभावना होती हैं।
- इसका कारण कमजोर कार्पस ल्यूटियम का बनना हैं, जिसके फलस्वरुप प्रोजेस्ट्रोन का स्तर न्यूनतम होना हैं।
- पशु नियमित अन्तराल पर कामोत्तोजना का लक्षण प्रदर्शित करता हैं अथवा फिर 30 दिन या उससे अधिक अन्तराल पर कामोत्तोजना की प्रवृति दोहराता है।

मिलती है।

गायों या अन्य पशुओं के गर्भाधान में पशुओं के शारीरिक वजन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रजनन से पहले पशुओं को अनिवार्य वजन को हासिल करना चाहिए। कम वजन वाले पशु गर्भाधान की खराब दर दिखाते हैं। यदि वजन कम रहता है, तो संतुलित आहार (ऊर्जा, वसा, प्रोटीन, विटामिन और खनिज) इसका समाधान है। स्टेरॉइडो बनाने के लिए सूक्ष्म खनिज, विशेषरूप से कॉपर, कोबाल्ट, लोहा आदि आवश्यक हैं। ये सूक्ष्म खनिज, विटामिन ए, डी3 और इ के पूरक हैं। इसलिए पशुओं को ऐसा संतुलित आहार खिलाना चाहिए, जिसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व एक निश्चित मात्रा में उपस्थित हों।

प्रायः देखा गया है, प्रजनन सम्बंधित सभी कारणों में से पशु का फिरना, दूध देने वाली गायों में बांझपन के प्रमुख कारणों में से एक है। यह गाय और भैंस के प्रजनन में बड़ी समस्या है, जिसके कारण दुग्ध उत्पादकों को बड़ा आर्थिक नुकसान होता है।

उपचार

पशुओं में रिपीट ब्रीडिंग की समस्या के निवारण हेतु निम्न खाद्य पदार्थो को प्रतिदिन गुड़ या नमक के साथ पशु के गर्मी में आने के पहले या दूसरे दिन से खिलाएंः-

- एक सफ़ेद मूली रोजाना 5 दिनों के लिए
- ग्वारपाठे (एलोवेरा) की एक पत्ती रोजाना 4 दिनों के लिए
- 4 मुट्ठियां सहजने की पत्तियां चार दिनों के लिए
- 4 मुट्ठियां कढ़ी पत्तियां हल्दी के साथ 4 दिनों के लिए
- 4 मुट्ठियां हड़जोड़/अस्थिसंधानकश की डंडियाँ 4 दिनों के लिए

इस उपचार को दोबारा दोहराये यदि पशु गर्भधारण नहीं कर रहा है। अंकुरित चना दाल (बंगाल चना) या अंकुरित बाजरा या अंकुरित गेहूं 200 ग्राम प्रतिदिन 15 दिनों के लिए मौखिक रूप से दे सकते है। गर्भाधान के बाद कमजोर पशुओं को प्रतिदिन लगभग 2 मुट्ठी कढ़ी पत्ते खिलाएं। पशु के परीक्षण व उपचार पशु चिकित्सक से कराना चाहिए, ताकि इसके कारण का सही पता लगा सकें। □□

1. स्नातकोत्तर छात्र, फार्माकोलॉजी एंड टॉक्सिकोलॉजी, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर (म प्र),
2. सहायक प्राध्यापक सह. वैज्ञानिक पशु उत्पादन शोध संस्थान, डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार)
3. सहायक प्राध्यापक पशु शरीर क्रिया विज्ञान एवं जैव रसायन विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

एक्सापार

AYURVET™

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे

- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

दुधारू पशुओं में ब्याने की अवधि में होने वाले प्रमुख रोग

-डॉ. राजेश कुमार

मवेशी या अन्य पशुधन के बीमार हो जाने पर उनका इलाज करने की अपेक्षा उन्हें तंदुरूस्त बनाये रखने का इंतजाम करना ज्यादा अच्छा है। कहावत भी प्रसिद्ध है "'समय से पहले चेते किसान"। पशुधन हेतु साफ-सुथरी, हवादार पशुशाला, संतुलित आहार तथा उचित देखभाल का इंतजाम करने पर उनके रोगग्रस्त होने का खतरा किसी हद तक टल जाता है। रोगों का प्रकोप कमजोर मवेशियों पर ज्यादा होता है। उनकी खुराक ठीक रखने पर उनके भीतर रोगों से बचाव करने की ताकत पैदा हो जाती है। पशुशाला की सफाई, परजीवी से फैलने वाले रोगों और छूत की बीमारियों से मवेशियों की रक्षा करती है। सतर्क रहकर पशुधन की देखभाल करने वाले पशुपालक बीमार पशु को झुंड से अलग कर अन्य पशुओं को बीमार होने से बचा सकते हैं।

दुधारू पशुओं में ब्याने/ब्यांत से लगभग एक महीना पहले एवं ब्याने के एक महीना बाद का समय संक्रमण काल कहलाता है। मुख्यतः गाय एवं भैंस में यह एक अति संवेदनशील अवस्था होती है, क्योंकि इस अवधि के दौरान पशु के शरीर में बहुत कम समय में काफी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। शरीर में होने वाले इन परिवर्तनों की वजह से इस अवस्था के दौरान पशु को कार्य तनाव का सामना करना पड़ता है। शरीर में होने वाले इन परिवर्तनों एवं तनाव की वजह से पशु के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिसकी वजह से इन पशु के रोगग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इस अवस्था के दौरान पशु के शरीर में पोषक तत्वों की मांग भी बढ़ जाती है। इसकी वजह से भी पशु के शरीर में विभिन्न अल्पता रोग होने की संभावनाएं भी बढ़ जाती है। दुधारू पशुओं में इस संक्रमण काल के दौरान होने वाले प्रमुख रोग एवं समस्याएं निम्नलिखित हो सकती है-

दुग्ध ज्वर रोग

यह रोग मादा पशुओं में ब्याने से कुछ दिन पहले या कुछ दिन बाद तक होने वाला एक खतरनाक रोग है। मुख्यतः (80 प्रतिशत) यह रोग पशु के ब्याने के पश्चात् पहले 48 घन्टों में ज्यादा होता है। देशी भाषा में इस रोग को कई जगह पर पशु का सुन्नपात में आना या पशु का ठण्ड में आना भी कहा जाता है। दुग्ध ज्वर रोग का मुख्य कारण पशु के शरीर में कैल्शियम लवण की कमी होना है। जर्सी गाय एवं जाफराबादी भैंस की नस्लों में यह रोग ज्यादा होता है।

दुग्ध ज्वर रोग की संभावनाएं

5-10 वर्ष की उम्र के पशुओं में मुख्यतः 3-7वीं ब्यांत के दौरान ज्यादा होती है। प्रायः अत्यधिक दूध उत्पादन करने वाले पशुओं में यह रोग ज्यादा देखने को मिलता है। पशु की ब्यांत के दौरान अत्यधिक ठण्डा वातावरण एवं लम्बी दूरी तक

पशु को लेकर जाना आदि भी इस रोग के होने के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

दुग्ध ज्वर रोग की शुरूआती अवस्था में मांसपेशियों में जकड़न एवं उत्तेजना देखने को मिल सकती है, जोकि बहुत ही कम समय (कुछ घंटे) के लिए होती है। इसके पश्चात् इस रोग में पशु खड़ा नहीं रह पाता एवं बैठ जाता है, तथा गर्दन को घुमाकर पीछे की तरफ देखने लगता है।

इसके अतिरिक्त पशु का सुस्त हो जाना, शरीर का तापमान कम हो जाना, आंखों की पुतलियों का चौड़ा हो जाना, गुदा द्वार से अपने आप गोबर का निकलना एवं पशु द्वारा चारा-पानी खाना बंद कर देना इत्यादि लक्षण भी देखने को मिलते हैं। उपरोक्त अवस्थाओं में अगर उचित इलाज नहीं किया जाता है, तो पशु जमीन पर लेट जाता है एवं शरीर का तापमान कम होने के कारण शरीर ठण्डा हो जाता है।

ज्यादा देर तक लेटे रहने की वजह से पशु को अफारा भी आ जाता है। इस अवस्था में पशु किसी भी बाहरी हरकत का जवाब देना बंद कर देता है एवं पशु की खून की नस मिलना भी मुश्किल हो जाती है। पशु को इस अवस्था में पहुँचने के बाद उपचार होना भी मुश्किल हो जाता है, एवं मृत्यु होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

थनैला रोग

थनैला रोग अयन/गादी/लेवटी एवं थनों को प्रभावित करने वाली समस्या है, जोकि समस्त पशु प्रजातियों के मादा पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँटनी इत्यादि में देखने को मिलता है, परन्तु ज्यादातर यह रोग गाय एवं भैंस में पाया जाता है। अधिकांशतः यह रोग जीवाणु संक्रमण के कारण होता है। इस रोग के जीवाणुओं का प्रसारण संक्रमित पानी

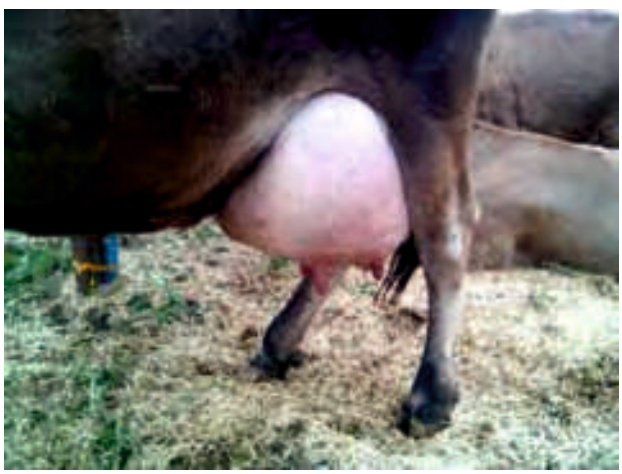

बिछावन, पशुओं के लिए उपयोग में लाने वाले उपकरण (बर्तन, दूध निकालने के मशीन, आदि) एवं दूध दोहने वाले व्यक्ति के हाथों हो सकता है।

पशुशाला में पाई गई अस्वच्छता, गादी या थनों में चोट तथा अपूर्ण दूध निकालना पशु को इस रोग के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। सामान्यतः दुग्धकाल के प्रारम्भ या अन्त में यह रोग होने की संभावना ज्यादा होती हैं, तथा वयस्क/अधिक आयु वाले पशु इस रोग से अधिक प्रभावित होते हैं। थनैला रोग से प्रभावित पशुओं में पाये जाने वाले लक्षणों में दूध की मात्रा एवं गुणवत्ता में गिरावट, गादी या थनों में सूजन एवं दर्द, दूध में छिछड़े या खून आना या कई बार तो बिल्कुल भी दूध ना आना या दूध की जगह पानी जैसा पदार्थ निकलना, पशु की लेवटी गादी या थनों का पत्थर की तरह सख्त हो जाना या गादी और थनों में गाँठ बन जाना तथा कई बार पशु को बुखार आना एवं भूख का कम हो जाना इत्यादि हो सकते हैं।

बहुत बार पशुओं में अलाक्षणिक थनैला भी देखने को मिलता है, जिसमें केवल पशु के दूध की मात्रा एवं गुणवत्ता में काफी कमी देखने को मिलती है। अलाक्षणिक थनैला के कारण पशुपालकों को ज्यादा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि लक्षणविहीन होने के कारण पशुपालकों का ज्यादा ध्यान इस तरफ नहीं जा पाता है एवं समय पर उचित उपचार नहीं होता है।

पशुओं में ऊपर दिए गए कोई भी लक्षण दिखाई देने पर पशु का दूध अपने नजदीकी पशु रोग जाँच प्रयोगशाला में जाँच करवाकर तुरंत पशु-चिकित्सक से उचित एवं पूरा इलाज करवाना चाहिए। उपचार में देरी करने पर यह रोग बढ़ सकता है तथा ठीक होने की संभावना कम हो जाती है, एवं पशु के

एक या एक से अधिक थनों के खराब होने की संभावना रहती है। पशुओं में होने वाला थनैला रोग भारत में ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में पशुओं में होने वाली सबसे मँहगी बीमारियों में से एक है, जिसकी वजह से पशुपालकों को बहुत भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

इसके अलावा कई बार थनैला रोग के लिए जिम्मेदार जीवाणुओं की वजह से मनुष्य में भी कई प्रकार के रोग होने का खतरा बना रहता है। इन सबको ध्यान में रखते हुए पशुपालकों को चाहिए कि वो अपने पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रख सकते हैं-

- रोगग्रस्त पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- पशु चिकित्सक की सलाह से पूरा इलाज करवाएं।
- रोगग्रस्त पशु का दूध सबसे आखिर में निकालें।
- किसी पशु के यदि एक या दो थनों में ही रोग हुआ हो तो रोगग्रस्त थनों का दूध सबसे आखिर में निकालें एवं ऐसे पशु/थनों का दूध पशुशाला में या इसके आसपास नहीं फेकें।
- दूध निकालते समय पशुशाला, हाथों, पशु की लेवटी एवं थनों की साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें।
- पशु का दूध समय पर तथा पूरा निकालना चाहिए।
- दूध निकालने के सही तरीके का इस्तेमाल करें एवं अंगूठे का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- दूध निकालने से पहले एवं बाद में पशु-चिकित्सक की सलाह से लाल दवाई या किसी की अन्य जीवाणुरोधक औषधि से टीट-डीपींग का इस्तेमाल करना चाहिए।
- किसी पशु का दूध निकालना बंद करना हो तो थनों में पशु-चिकित्सक की सलाह लेकर जीवाणु प्रतिरोधक दवाई डालकर छोड़ना चाहिए।
- पशु की लेवटी एवं थनों पर चोट लगने से बचाना चाहिए।
- दूध निकालने के उपरान्त पशु को कम से कम आधा घंटा बैठने नहीं देना चाहिए, जिन कारणों की वजह से थनैला रोग होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
- खास ध्यान रखना चाहिए जैसेकि पशु के थनों या लेवटी पर घाव होना या चोट लगना, ज्यादा दूध देने वाले पशु, पशु की गादी या थनों का ज्यादा नीचे लटके हुए होना, ब्याने के तुरंत पश्चात् पशु के अन्य रोग (दुग्ध ज्वर, जेर न गिराना एवं बच्चेदानी का संक्रमण इत्यादि) होना।
- इन सब बातों के अतिरिक्त थनैला रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सक से पशु का उपचार करवाना चाहिए।

ब्याने के बाद पशु का दूध ना देना

कई बार ऐसा भी देखने में आया है कि ब्याने के तुरंत बाद पशु न तो पावसता है और न ही बिल्कुल भी दूध देता है, जबकि पशु देखने में पूरी तरह स्वस्थ लगता है, जैसेकि पशु द्वारा चारा-पानी खाना, गोबर-पेशाब करना, चलना-फिरना, उठना-बैठना, शरीर का तापमान, इत्यादि। बहुत बार ऐसी परिस्थिति में पशु की लेवटी। गादी को देखकर लगता ही नहीं कि यह ताजा ब्याया हुआ है। न ही गादी/लेवटी में कोई सूजन आदि देखने को मिलती है। इस तरह की समस्या के लिए पशु में थनैला रोग एवं कैल्शियम की कमी के अलावा अन्य कारण भी जिम्मेदार हो सकते हैं, जैसेकि हारमोनस की समस्या, मानसिक समस्या इत्यादि। यह समस्या कई बार उन पशुओं में भी देखने को मिलती है, जिनमें खीस (किली) पूरी या बिल्कुल भी नहीं निकाली गई हो। ऐसी स्थिति में पशुपालकों को देर न करते हुए तुरंत अपने नजदीकी पशुचिकित्सक से सम्पर्क करके पशु का

उचित इलाज करवाना चाहिए।

कीटोनमियता

इस रोग का कारण पशु के शरीर में दोषपूर्ण ग्लूकोज का चयापचय है, जिसकी वजह से पशु के रक्त में कीटोन प्रकृति के तत्वों की अधिकता हो जाती है एवं मूत्र, दूध एवं सांस में कीटोन तत्वों का उत्सर्जन बढ़ जाता है। यह रोग पशुओं में उनके अधिक दूध उत्पादन की अवस्था में अधिक पाया जाता है।

भेड़ एवं बकरियों में यह रोग गर्भावस्था में पाया जाता है, इसलिए इन पशुओं में इसे गर्भावस्था विषाक्ता के नाम से जाना जाता है। भली-भांति पोषित पशुओं में अधिक प्रोटीन आहार, प्राथमिक दुग्धाबस्था में अल्प ऊर्जा पूरित आहार, अपर्याप्त श्रम एवं आहार में कोबाल्ट की अल्पता का संबंध भी इस रोग से है। यह रोग क्षयकारी एवं मानसिक बीमारी के रूप में पाया जाता है।

प्रभावित पशुओं में धीरे-धीरे भूख की कमी (पशु दाना/चाट खाना कम या बंद कर देता है, परन्तु सुखा चारा खाता रहता है) एवं दूध उत्पादन की कमी के रूप में प्रकट होता है। पशु का शारीरिक वजन तथा चमड़ी के नीचे की वसा कम हो जाती है, एवं पशु धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है।

पशु के दूध, मूत्र एवं सांस से कीटोनिक (मीठी) गन्ध आने लगती है। मानसिक रोग की स्थिति में पशु में जबड़ों की भ्रामक गतिशील अत्याधिक लार, अति संवेदनशीलता, अन्धापन, लड़खड़ाहट, असामान्य चाल तथा घोड़े की तरह लात मारना देखा गया है। पशु की माँसपेशियों में हलचल तथा अकड़न भी देखने को मिल सकती हैं।

बकरियों में यह रोग गर्भावस्था के दौरान मानसिक रोग के रूप में प्रकट होता हैं तथा प्रभाबित पशुओं में चलने की विवशता देखी जाती है। प्रभावित पशु अपने सिर को किसी अजीवित वस्तु के विरुद्ध टकराते हैं। इस रोग की चिकित्सा के लिए 20 से 25 या 50 प्रतिशत ग्लूकोज़ पशु की रक्तवाहिनी में लगाया जाता है। इस रोग के उपचार के लिए प्रोपाइलिन ग्लाइकोल, ग्लिसरिन, सोडियम प्रोपियोनेट, ऐड्रिनोकोर्टिक्वाइड, ग्लुकोकोर्टिक्वाइड या इंसुलिन का प्रयोग भी लाभकारी सिद्ध होता है। पशु आहार में कोबाल्ट, फास्फोरस एवं आयोडीन की उचित मात्रा, संतुलित पशु आहार एवं व्यायाम से इस रोग को होने से रोका जा सकता है।

फास्फोरस अल्पता

यह रोग फास्फोरस तत्व की कमी से होने वाला रोग है, जो प्रभावित पशुओं लाल रक्त कोशिकाओं के नष्ट होने तथा रक्ताल्पता (अनीमिया) के रूप में परिलक्षित होता है। यह रोग 3 से 6 ब्यांत की अवधि के दौरान अथवा अत्यधिक दूध देने वाले पशुओं में ज्यादा पाया जाता है तथा ब्याने के 2 से 4 सप्ताह के बाद यह रोग अधिक देखा गया है। गाय की बजाय भैंस में यह रोग अधिक पाया जाता है।

भूख की कमी, कमजोरी, दूध उत्पादन में कमी, पशु के शरीर में रक्त की कमी एवं श्लेष्मिक झिल्लियों का पीलापन, पशु के शरीर में जल की कमी के कारण गोबर का सूखा एवं कठोर होना, पशु के पेशाब का गहरा भूरा (कॉफी के जैसा) या लाल होना, पीलिया तथा हृदय की गति बढ़ जाना इस रोग में पाये जाने वाले मुख्य लक्षण है।

प्रभावित पशु के शरीर में रक्त की कमी (अनीमिया) तथा भूख की कमी के लिए प्रभावित पशु को फास्फोरस उपलब्ध कराने के लिए सोडियम ऐसिड फास्फेट रक्त मार्ग (नस में) तथा त्वचा के नीचे दिया जा सकता है। पशु चारे के साथ हड्डियों का

चूरा या डाइकैल्शियम फास्फेट भी लाभकारी होता है।

रक्त बढ़ाने के लिए कॉपर, लोहा तथा कोबाल्ट सम्मिश्रित टॉनिक लाभकारी होते हैं। रोग की रोकथाम के लिए ऐसे क्षेत्र जहाँ की मिट्टी में फास्फोरस की कमी हो में पशुओं को पूरक आहार के रूप में खनिज मिश्रण संतुलित आहार के साथ नियमित रूप से देना चाहिए।

बच्चेदानी संबंधित समस्याएं

पशुओं में ब्यांत के दौरान कई प्रकार की बच्चेदानी संबंधित समस्या रोग भी हो सकती हैं, जैसेकि बच्चेदानी का घूम जाना, ब्याने के दौरान समस्या होना, गर्भापात हो जाना, पशु का समय से पूर्व ब्याना, मरा हुआ बच्चा पैदा होना, बच्चेदानी का पशु के शरीर से बाहर आ जाना (पीछा दिखाना), पशु द्वारा जेर ना डालना, बच्चेदानी में मवाद पड़ जाना इत्यादि।

इस प्रकार की कोई भी समस्या होने पर पशुपालकों को चाहिए कि वो देर न करते हुए तुरंत अपने नजदीकी पशुचिकित्सक से सम्पर्क करके स्थिति से अवगत कराते हुए पशु का उचित एवं पूरा इलाज करवाएं।

अगर उपरोक्त समस्याओं में पशु को समय पर उचित इलाज नहीं मिलता है, तो पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है तथा पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

जैसाकि उपरोक्त बताई गई पशुओं में संक्रमण काल की विभिन्न समस्याओं में बताया गया है कि यह सभी काफी गंभीर किस्म के रोग हैं। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि वो इनके बारे मे सचेत एवं सजग रहे तथा ऐसे कोई भी लक्षण दिखाई देने पर तुरंत अपने पशुचिकित्सक को दिखाएं तथा उपचार करवाएं। इसके अतिरिक्त अगर पशुपालक अपने पशु की देखभाल वैज्ञानिक तरीके से करते हुए पशु को संतुलित आहार, खनिज मिश्रण एवं उचित व्यायाम तथा समय-समय पर पशु-चिकित्सक की सलाह लेते रहें तो इन सभी समस्याओं/रोगों से काफी हद तक बचा जा सकता है। □□

जमशेदपुर, झारखंड, मो. 9431309542, ईमेल: rajeshsinghvet@gmail.com

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:- दूरभाष: 91-120-7100201

कीटोसिस एवं नेगेटिव ऊर्जा से छुटकारा पाएं

कीटोरोक अपनाएं

AYURVET™

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

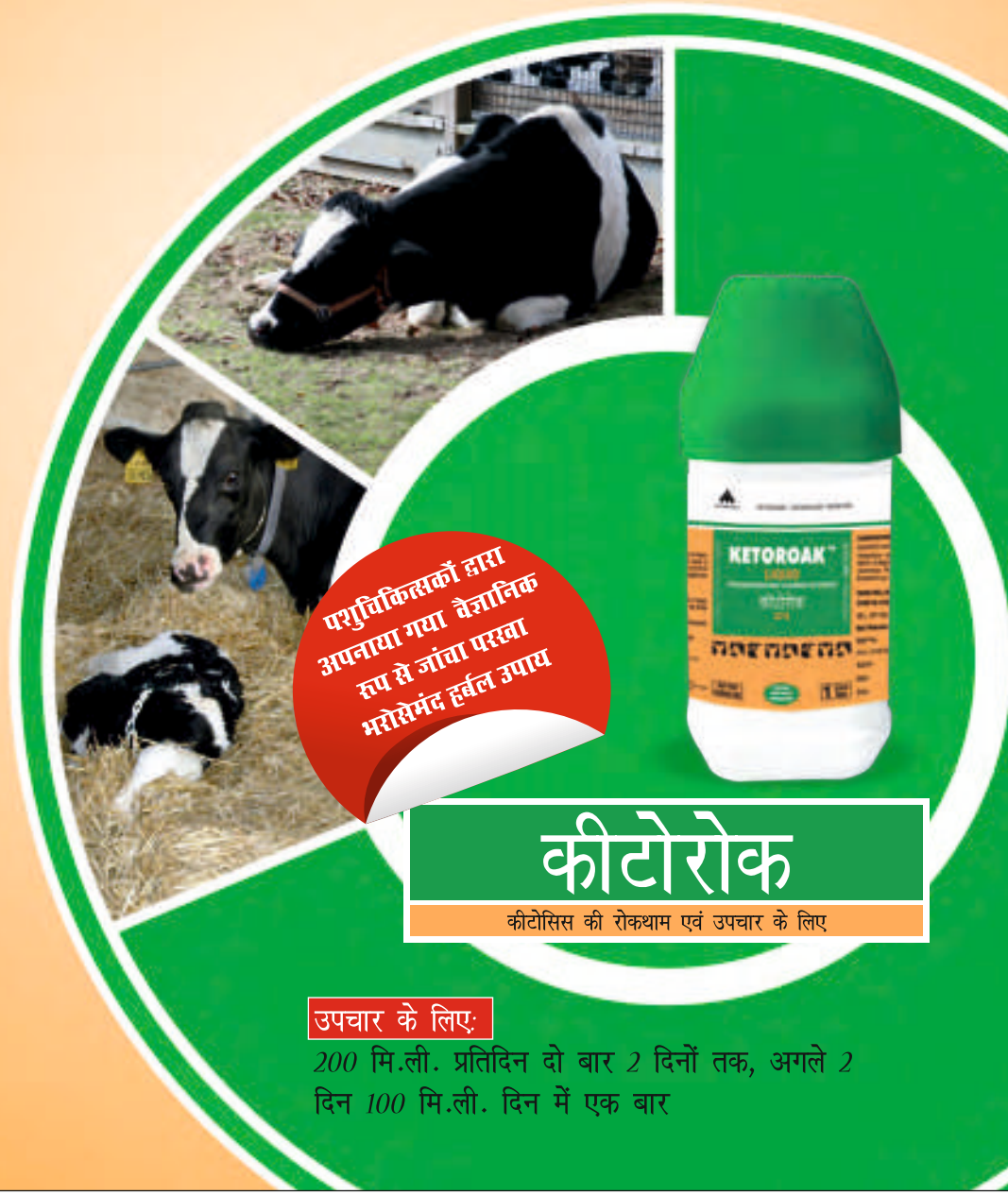

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

गाय-भैंस या बकरियों में किलनी की समस्या

अक्सर पशुपालक यह शिकायत करते हैं कि उनके पशु कम चारा खाते हैं, कम दूध देते हैं, जबकि वह देखने में स्वस्थ होते हैं। पशुओं में इस तरह के लक्षण तब दिखाई देते हैं, जब उनके शरीर में किलनी, जूं और चीचड़ का प्रकोप होता है। भारत में खासकर दुधारू पशुओं में किलनी, जूं और चिचड़ी जैसे परजीवियों का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। ये परजीवी पशुओं का खून चूसते हैं, जिससे पशु तनाव में आ जाते हैं। कई बार उनके बाल झड़ जाते हैं। समस्या ज्यादा दिनों तक रहने पर पशु बहुत कमजोर भी जाते हैं। कई बार पशुओं के बच्चों (बछड़े-पड़वा आदि) की मौत तक हो जाती है। इन समस्याओं से बचने के लिए पशुपालक कई रासायनिक दवाओं का उपयोग करते हैं।

कई बार परजीवियों की वजह से पशु तनाव में चला जाता है, जिसका सीधा असर उसके दूध उत्पादन पर पड़ता है। ज्यादातर पशुपालक जानकारी के अभाव में पशुओं में होने वाले दाद, खुजली और जू होने पर ध्यान नहीं देते हैं, जिससे आगे चलकर उनको काफी नुकसान उठाना पड़ता है।

अगर पशुपालक थोड़ा ध्यान दें, तो बाहरी परिजीवी से दुधारु पशुओं को बचाया जा सकता है। कई बार परजीवियों की वजह से पशु तनाव में चला जाता है, जिसका सीधा असर उसके दूध उत्पादन पर पड़ता है। भीतरी परजीवियों के प्रकोप से भैंस के बच्चों में तीन महीने की उम्र तक 33 प्रतिशत की मौत हो जाती है और जो बच्चे बचते हैं, उनका विकास बहुत धीमा होता है। इसलिए शुरू में ही परजीवियों का ध्यान रखना चाहिए।

किलनियों से पशुओं में लाइम रोग, क्यू ज्वर, बबेसिओसिस जैसी कई बीमारियां भी पनपती है। ये कई जूनोटिक रोगों के वैक्टर के रूप में मच्छरों के बाद दूसरे स्थान पर हैं तथा इन रोगों के प्रकोप द्वारा नुकसान पशु उत्पादकता के लिए एक बड़ी बाधा है:-

- दुग्ध उत्पादन में कमी आना।
- भूख कम लगाना।
- चमड़ी का खराब हो जाना।
- बालों का झड़ना।
- पशुओं में तनाव और चिड़चिड़ापन का बढ़ना आदि।
- कम उम्र के पशुओं पर इनका प्रतिकूल प्रभाव ज्यादा होता है।

लक्षण

- पशुओं में खुजली एवं जलन होना।
- दुग्ध उत्पादन में कमी आना।
- भूख कम लगाना।
- चमड़ी का खराब हो जाना।
- बालों का झड़ना।
- पशुओं में तनाव और चिड़चिड़ापन का बढ़ना आदि।
- कम उम्र के पशुओं पर इनका प्रतिकूल प्रभाव ज्यादा होता है।

डेरी में गंदगी से फैलता है रोग

पशुशालाओं में गंदगी होने से इन किलनियों की संख्या में लगातार इजाफा होता है। किलनियों के रोकथाम के बारे में करनाल जिले में पशुचिकित्सक डॉ. हरिओम शर्मा बताते हैं, "किलनी और चीचड़ ज्यादातर सीलन और अंधेरे वाली जगह पर रहती हैं, जहां पर पशुओं को बांधा जाता है वहां पर कई बार मिट्टी गोबर या चारा इकट्ठा रहता है, तो किलनी वहीं अंडे दे देती हैं। इसलिए साफ-सफाई पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए, जहां पशु बैठते हैं, उसको सूखा रखना चाहिए।"

रोकथाम

- खाद्य तेल (जैसे अलसी का तेल) का एक पतला लेप लगाना चाहिए।
- साबुन के गाढ़े-घोल का इस्तेमाल एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार करना चाहिए।
- आयोडीन को शरीर के ऊपर एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार रगड़ना चाहिये।
- लहसुन के पाउडर का शरीर की सतह पर इस्तेमाल करें।
- एक हिस्सा एसेन्सियल आयल और दो-तीन हिस्सा खाद्य तेल को मिलाकर रगड़ना चाहिए।
- किलनी के लिए होम्योपैथिक इलाज भी काफी उपयोगी है, इसलिए इसका प्रयोग करना चाहिए।
- पाइरिथ्रम नामक वानस्पतिक कीटनाशक भी काफी उपयोगी होता है।
- पशुओं की रीढ़ पर दो-तीन मुट्ठी सल्फर का प्रयोग करना चाहिए।
- चूना-सल्फर के घोल का इस्तेमाल 7-10 दिन के अंतराल पर लगभग 6 बार करना चाहिये।
- किलनी नियंत्रण में प्रयोग होने वाले आइवरमेक्टिन इंजेक्शन के प्रयोग के बाद दूध को कम से कम दो से तीन हफ्तों तक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय डेरी अनुंसधान संस्थान में प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के. पोन्नुसामी आगे कहते हैं, ''ज्यादातर पशुपालक किलनी को हटाने के लिए वेटनरी डॉक्टर की सलाह से दवाई लगा देते हैं, लेकिन 15 दिन में वह किलनी फिर से लग जाती है। इसमें किसान का पैसा भी खर्चा होता है और एक ही दवा को बार-बार प्रयोग करने पर उसमें रेजीटेंट होता है। ऐसे में नीम की पत्ती और माला प्लांट को मिलाकर एक घोल तैयार किया, जिससे तीन दिन में ही किलनी खत्म हो जाती है।''

ऐसे बनाए घोल

- ढाई किलो नीम की पत्तियां 4 लीटर पानी में उबालें।
- 12 घंटे बाद पत्तियां निकालकर फेंक दे, पानी रख लें।
- 2 किलो निर्गुण्डी (माला) की पत्तियों को 1 लीटर पाने में उबालें।
- 12 घंटे बाद पत्तियां हटाकर उसे छानकर रख लें।
- दोनों को मिलाकर बना घोल एक डिब्बे में रख लीजिए।
- 9 लीटर पानी और 1 लीटर घोल मिलाइए दवा तैयार कीजिए।
- पानी मिले घोल को पशुओं के प्रभावित हिस्सों पर छिड़काव करें।
- 3-4 दिन सुबह शाम छिड़काव करने से पशुओं को आराम मिलेगा।

बचाव

- पशुओं को सेहतमंद रखने और बीमारी से बचाने के लिए उचित समय पर टीका लगवाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को नियमित रूप से पशुचिकित्सक को दिखाना चाहिए।
- बीमार पशुओं का इलाज जल्दी कराना चाहिए, ताकि पशु रोगमुक्त हो सकें।
- बीमार पशु के बरतन व जंजीरें पानी में उबाल कर जीवाणुरहित करने चाहिए।
- फर्श और दीवारों को भी कास्टिक सोडा के घोल से साफ करना चाहिए।
- परजीवी के प्रकोप से बड़े पशुओं में कब्ज, एनीमिया, पेट दर्द और डायरिया के लक्षण दिखाई देते है। इसलिए वर्ष में 2 बार भीतरी परजीवीयों के लिए कृमिनाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
- बाह्य परजीवी जैसे किलनी, जूं से बचने के लिए समय-समय पर पशुओं की सफाई की जानी चाहिए।
- नए खरीदे गए पशुओं को कम से कम तीन सप्ताह तक अलग रखकर उन का निरीक्षण करना चाहिए। इस अवधि में अगर पशु सेहतमंद दिखाई दें और उन्हें टीका न लगा हो, तो टीकाकरण अवश्य करा देना चाहिए।

□□

साभार: राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

AYURVET
क्या आपके पशु
में ये लक्षण हैं?
तेज बुखार
नाक तथा आँखों से पानी आना
दूध उत्पादन का अचानक घटना
अत्याधिक लार का बनना
शरीर पर गाँठ बनना जोकि घाव में बदल जाते हो
गाँठ वाली त्वचा का गलना तथा कीड़े लगना
यह लम्पी स्किन डिसीज़ के लक्षण हो सकते हैं।
इस्तेमाल करें
चर्मिल प्लस
त्वचा के सभी प्रकार के घावों पर असरदार
CHARMIL Plus
CHARMIL

जानकारी पायें, आमदनी बढ़ायें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

पशुस्वास्थ्य, पशु पोषण, मौसमी बीमारियों से बचाव, बदलते मौसम में पशु प्रबंधन,
वर्मी कम्पोस्ट, बायोगैस, आधुनिक अनुसंधान एवं पशुपालन संबंधी वैज्ञानिक जानकारियों का खजाना

आज ही स्वयं सदस्य बनें और दूसरों को भी सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित करें

आप हमसे जुड़ सकते हैं-1. वार्षिक सदस्य बनकर 2. विज्ञापन देकर

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... "आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली" के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक **वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए**

आयुर्वेट लिमिटेड 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201

पशुओं में पैराटयूबरक्लोसिस रोग

-डॉ. गया प्रसाद जाटव, डॉ.. ए.के.जयराव, डॉ. विवेक अग्रवाल, डॉ. सुप्रिया शुक्ला,
डॉ. रवि सिकरोडिया, डॉ. मुकेश शाक्य, एवं डॉ. अशोक कुमार पाटिल

क्षय रोग पशुओं में एक दीर्घकालीन संक्रामक छूतदार बहुत ही खतरनाक जूनोटिक अर्थात पशुजन्य रोग है, और ये पशुओं से इंसानों और इंसानों से पशुओं में भी फैल सकता है। मनुष्य के स्वास्थ्य के रक्षा के लिए इस रोग से काफी सतर्क रहने की जरूरत है। पशुओं में यह रोग माइकोबैक्टेरियम बोविस तथा मनुष्यों में माइकोबैक्टेरियम टयूबरक्लोसिस नामक जीवाणु से होता है। दोनों प्रजातियां पशु एवं मनुष्यों में क्षय रोग उत्पन्न कर सकती हैं। इस रोग के जीवाणु संक्रमित पशुओं के दूध, लार, मल या नासिका स्राव में विसर्जित होते हैं।

पशुओं में होने वाला एक जीवाणु जनित रोग हैं, जोकि एक पशु से दूसरे पशु एवं मनुष्य में भी आसानी से छुआ-छूत के जरिये फैल सकता है। यह रोग मुख्यतः गाय, बैल, भैंस एवं छोटे पशु जैसे कि भेड़ बकरी कुत्ते इत्यादि में आसानी से फैल सकता है। एवं एक बार रोग आ जाने के बाद पशु लंबे समय के लिये इससे ग्रसित हो जाता है। चूंकि यह रोग पशुओं से मनुष्यों में आसानी से फैल सकता है। अतः इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

रोग का कारण

पैराटयूबरक्लोसिस रोग का प्रमुख कारण एक प्रकार का जीवाणु है, जिसे हम माइकोबैक्टीरियम एवियम सबस्पीसीज पैराटयूबरक्लोसिस के नाम से जानते हैं।

रोग के लक्षण

रोग के प्रमुख लक्षण निम्नानुसार हैं:-

- पशुओं को दस्त लगना, जोकि एक दिन में चार से पांच बार लग सकते हैं। फलतः पशुओं में पानी की कमी हो जाती है।
- पशुओं में कमजोरी जोकि मुख्यतः वसा और मांसपेशियों के नष्ट होने से होती है, जिससे पशु एक लंबे समय के बाद इतना कमजोर हो जाता है कि वह हड्डियों के ढांचेनुमा दिखता है।
- पशु का वजन कम होना।
- दुग्ध उत्पादन में कमी होना।
- पशुओं की चमड़ी की चमक चले जाना।
- चर्बी गलने की वजह से जबड़े के नीचे सूजन आना।
- चूंकि यह एक लंबे समय तक चलने वाली बीमारी है, जिसके लक्षण पशुओं में रोगग्रसण के 2-3 वर्ष बाद दिखाई देते है।
- रोग ग्रसित पशु में कमजोरी।
- रोग ग्रस्त आतों में सूजन।
- रोग ग्रस्त आंतो की ग्रथियों में सूजन।

रोग का फैलाव

पशुओं में यह रोग एक पशु से दूसरे पशु में आसानी से संक्रमित गोबर खाद से, मादा पशुओं के थनों से दूध पीने वाले छोटे बच्चों में दूध से, चीके (कोलेस्ट्रम) इत्यादि से आसानी से यह रोग फैल सकता है। इस रोग में पशुओं की आंतो में छोटी-छोटी गठाने बन जाती है तथा आंतों में सूजन अधिक होने से पशुओं को दी जाने वाली खुराक (खाना-पीना) पशुओं के शरीर में अवशोषित नहीं हो पाती हैं एवं दस्त के रूप में बाहर निकल जाती है। इससे पशु दिन व दिन कमजोर होता जाता है और अतंतः मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। □□

पशु विकृति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, (नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर), मह्-453446

AYURVET

जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी

रुचामैक्स
दूर करे परेशानी

रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें
97803 11444

दुधारु पशुओं में आहार प्रबंधन

-डॉ. विजय लहंगेर

गौ पशुओं का महत्व भारतीय अर्थव्यवस्था में सर्वविदित है। इनका खेती के संग लगातार पूरक व अनुपूरक का संबंध रहा है। प्रभावी आहार प्रबंध पशुओं के उत्पादन स्तर व स्वास्थ्य को सर्वाधिक प्रभावित करता है। पशुपालन पर होने वाले कुल खर्च का लगभग 75 प्रतिशत पशुओं की खिलाई पिलाई पर आता है। अतः यह आवश्यक है कि जहां तक सम्भव हो गौ पशुओं को पर्याप्त चारा व पोषक तत्व, ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व, विटामिन व जल लगातार मिलते रहें।

हमारे देश में हरे चारे का उत्पादन दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है और दाने वाली फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफलों के अर्न्तगत क्षेत्रफल बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरुप उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में भूसा व पुआल जैसे सूखे चारे ही गौ- पशुओं के मुख्य आधारिक आहार है। यह चारे पशु चाव से नहीं खाते। इनके कम अर्न्तग्रहण, निम्न पाचकता, नाइट्रोजन एवं खनिजों जैसे कुछ महत्वपूर्ण तत्वों की कमी के कारण पशुओं को संतुलित मात्रा में पर्याप्त पोषक तत्व नही मिल पाते। इन सूखे चारों में प्रोटीन की मात्रा 3 से 4 प्रतिशत पायी जाती है, जबकि पशुओं के आहार में प्रोटीन की मात्रा कम से कम 6-7 प्रतिशत होनी चाहिए, जोकि पशुओं के उत्पादन के अनुसार बढ़ती रहती है।

पशु पोषण खाद्य पदार्थो की उपलब्धता व उनकी कीमत, पशु प्रजाति उनकी आयु भार उत्पादन स्थिति (जैसे गर्भावस्था, दूध उत्पादन अवस्था, वृद्धि अवस्था) आदि पर निर्भर करता है।

ग्रामीण अंचल में उपलब्ध क्षेत्रीय आहार संसाधनों के वैज्ञानिक रीति से समुचित उपयोग द्वारा पशुओं का उत्पादन बढ़ाना है। इसके लिए यह आवश्यक है कि पशु पोषण से प्रचलित आहारीय प्रणालियों से जुड़ी समस्याओ को समझकर उनका उचित समाधान किया जाए।

संतुलित पशु आहार

वह आहार जिसमें जीवन निर्वाह, अपेक्षित उत्पादन व स्वास्थ्य हेतु सभी पोषक तत्व (प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज लवण एवं विटामिन आदि) समुचित मात्रा में मौजूद हों, संतुलित पशु आहार कहलाता है। पशुपालकों को यह समझना अति आवश्यक है कि पशुओं को अपने जीवन निर्वाह, शारीरिक क्रियाओं को सुचारु रुप से चलाने अथवा दूध को बढ़ाने के लिए, सभी पोषक तत्वों जैसे प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज लवण एवं विटामिन्स की समुचित मात्रा में आवश्यकता होती है, जोकि किसी एक चारे, भूसे या दाने से पूरी नहीं की जा सकती है और न ही सभी पोषक तत्व किसी एक दाने अथवा खल में समुचित

मात्रा में मौजूद होते है। अतः आवश्यक है कि पशुपालक अपने पशु को उसकी आवश्यकतानुसार सूखे चारों और संतुलित रातिब को उचित अनुपात में मिलाकर खिलायें।

संतुलित व पौष्टिक आहार के लाभ

- पशुओं को सभी पोषक तत्व आवश्यकतानुसार संतुलित मात्रा में उपलब्ध कराता है।
- पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता को लगभग 25-30 प्रतिशत बढ़ाता है एवं लम्बे समय तक दूध देने की क्षमता बनाये रखता।
- पशुओं को कुपोषण से बचाता है व पशु का गर्मी में न आना, बार-बार फिरना, गर्भ न ठहरना आदि समस्याओं से छुटकारा दिलाने में मदद करता है।
- पशुओं के दो ब्यांतों के अन्तर को कम करता है।
- पशुपालक को पशुपालन से होने वाली आमदनी को बढ़ाता है।
- पशु को स्वस्थ, तन्दुरुस्त एवं अधिक लाभदायी बनाता है तथा अपच, भूख में कमी कमजोरी आदि समस्याओं से भी राहत दिलाता है।

संतुलित संपूरक रातिब

एक संतुलित रातिब में दलिया, चोकर/पालिश व खल का उचित सम्मिश्रण होना आवश्यक है, ताकि पशु उत्पादन हेतु पर्याप्त आवश्यक पोषक तत्व उन्हें मिल सकें। संतुलित रातिब में प्रोटीन की मात्रा लगभग 20 प्रतिशत होनी चाहिए। सामान्यतः पशुपालक प्रक्षेत्र पर उपलब्ध जो भी घटक होता है उसे ही अपने पशु को खिला देते हैं जैसे मात्र दलिया या चोकर अथवा खल रातिब मिश्रण की उपलब्धता पर निर्भर करती है। इस प्रकार पशुओं के आहार में प्रोटीन की 50 प्रतिशत कमी पायी जाती है। दुधारू पशुओं की उत्पादन क्षमता के अनुसार संतुलित रातिब बनाकर उचित मात्रा में खिलायें जा सकते है।

□□

पशुचिकित्सक, निवास, मंडला (म.प्र.)

AYURVET™

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी, पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत, यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट

लीवर टॉनिक

यकृफिट के उपयोग

- यकृत को क्षति से बचाने हेतु
- कमजोरी या बीमारी से उभरते हुए पशु के दुर्बल यकृत को स्वस्थ करने हेतु
- यकृत में सूजन, पीलिया, विषाक्तता, लीवर फ्लूक या अन्य पेट के कीड़ों के इलाज में सह-उपचार हेतु
- मेमने, बछड़े या बछियों के शारीरिक विकास हेतु
- कार्यक्षमता तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने हेतु

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

•250 मि.ली. पैक में भी उपलब्ध

देसी मांगुर मछली का करें उत्पादन, होगी लाखों की आमदनी

मछली पालन से किसान कम क्षेत्र में अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। मछली पालन के लिए इच्छुक व्यक्तियों को मौसम, जलवायु, मिट्टी और पानी को ध्यान में रखते हुए सही मछली का चुनाव करना जरुरी होता है। देसी मांगुर का वैज्ञानिक नाम क्लैरियस मांगुर है, मूल रूप से यह मीठे पानी की कैटफ़िश की एक प्रजाति है। कम गहराई तथा कम आक्सीजन में मांगुर मछली पालन अच्छे से किया जा सकता है। मांगुर मछली में प्रोटीन व लौह तत्व अधिक मात्रा में मिलता है, जबकि वसा कम होती है।

क्यों लाभकारी है मांगुर मछली पालन

मांगुर मछली पालन से किसानों को लाभ मिलते हैं-उथले, दलदली, कम पानी व प्रतिकूल पर्यावरणीय स्थिति में भी बढने की क्षमता। कम घुलित ऑक्सीजन वाले जल क्षेत्र में भी पालन संभव। बाजार में मांग अधिक। कार्प मछलियों की तुलना में बाजार मूल्य दर अधिक है। सरल मछली प्रबंधन व अपेक्षाकृत कम लागत।

मांगुर मछली पालन के लिए तालाब निर्माण

तालाब निर्माण से पूर्व पानी परीक्षण करा ले, ताकि उत्पादक शक्ति व जलधारण क्षमता का पता चले। तालाब हेतु 7-8 पी.एच. मान वाली क्ले सिल्ट/दोमट मिट्टी का चयन उचित है। तालाब पर आवागमन सुलभ हो, जिससे बीज, खाद, खाद्य आदि उपकरण आसानी से पहुँच सकें। तालाब क्षेत्र प्रदूषण व बाढ़ मुक्त हो। जरूरत पड़ने पर तालाब का पूरा पानी निकाला व भरा जा सके। मांगुर पालन हेतु 0.02-0.1 हैक्टेयर क्षेत्रफल का तालाब पर्याप्त है।

पानी की गुणवत्ता

पानी प्रचुर मात्रा में अच्छी गुणवत्ता वाला हो। पानी का पी.एच. मान 7-8.5 व तापमान 27-31 डिग्री सेल्सियस हो। पारदर्शिता 35-40 से.मी. व घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 -7 मि.ग्रा. प्रति लीटर हो। तालाब में 0.75-1 मीटर तक पानी की गहराई उपयुक्त मानी जाती है। वायुश्वासी होने से देसी मांगुर मछली कम पानी व उथले जल क्षेत्र में भी सुगमता से रह व बढ़ सकती है।

मांगुर मछली के लिए आहार

सामान्यतः मांगुर मछलियाँ मांसाहारी होती हैं। पूरक आहार हेतु इन्हें सूखी मछलियाँ, मछलियों का चूरा, सरसों खली, चावल का कना आदि दिया जाता है। ये सूक्ष्म केंकड़ों, कीट-पतंगों आदि के लार्वा खाती हैं। सूखी मछलियों में 30-32 प्रतिशत प्रोटीन होता है, जो मांगुर के विकास हेतु अच्छा है। बाजार में उपलब्ध मांगुर आहार पानी में स्थिर रहने वाला, संतुलित व जल को प्रदूषित न करने वाला भी उपयोग हो सकता है। शिशु को आहार दिन में दो बार, शरीर भार का 3-5 प्रतिशत दिया जाता है।

मांगुर शिशु की प्राप्ति

मांगुर मछली दलदली बिलों व धान के खेतों में वर्षा में प्रजनन देती है। इसके बीज संग्रहण का सही समय सर्दी से पूर्व का है। इसके शिशु तालाबों व पानी से भरे छोटे गड्ढों से प्राप्त हो सकते हैं। मांगुर के सफल प्रेरित जनन के बाद इनके बीजों को पश्चिम बंगाल, असम, बिहार आदि राज्यों से रेल या अन्य साधनों द्वारा मंगवा सकते हैं। संचय तालाब में अंगुलिकाओं का हस्तांतरण तालाब तैयारी के 8-10 दिनों बाद मांगुर अंगुलिका या शिशु, जो 3-5 ग्राम के हों, को छोटे या बड़े तालाबों में स्थानांतरित किया जाता है। शिशुओं को तालाब में स्थांतरित करने से पूर्व इसका अनुकूलन आवश्यक है। इसके लिए शिशुयुक्त पैकेट को तालाब में 15-20 मिनट हेतु छोड़ा जाता है। पैकेट का बाद में मुंह खोलकर शिशुओं को तालाब में धीरे-धीरे प्रवाहित किया जाता है। मांगुर पालन हेतु 50-70,000 प्रति हैक्टेयर शिशुओं की जरूरत होती है। उत्पादन अनुकूल परिस्थितियों में मांगुर 10-12 माह में 100-150 ग्राम भार ले लेती है। मछलियों की वृद्धि व स्वास्थ्य जाँच करते रहें। विकसित मछलियों को संचय तालाब में छोटे जाल चलाकर या तालाब से पानी की निकासी करके पकड़ा जा सकता है। बाजार में मांगुर का मूल्य 500-600 रु. प्रति किग्रा. है। एक हैक्टेयर तालाब से 2-3 टन मांगुर उत्पादन करके औसतन 8 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ अर्जित कर सकते हैं। □□

-आयुर्वेट डेस्क

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की योजनाओं के लिए बजट

केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को संसद में केन्द्रीय बजट 2022-23 पेश किया। वैसे तो इस बजट में अभी किसानों के लिए कोई नई योजना की शुरुआत नहीं की गई है, परंतु पहले से चली आ रही कई योजनाओं की लिए जहां बजट को बढ़ाया गया है। इस वर्ष देश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के तहत 124000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, जोकि पिछले वर्ष 123017.57 करोड़ रुपए था। वहीं पिछले वर्ष का जो संशोधित बजट घटाकर 118294.75 करोड़ कर दिया गया था।

कम किया गया प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का बजट: प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना वर्ष 2016 से चलाई जा रही है। इस वित्त वर्ष 2022-23 की बजट में योजना के मद को घटाकर 15,500 करोड़ रुपए किया गया है।

बढ़ा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का बजट: यह योजना वर्ष 2019 से शुरू की गई थी, पर इस योजना को वर्ष 2018 में लागू किया गया था। इस वर्ष बजट में 300 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई है।

कम किया गया प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना का बजट: किसानों को पेंशन की सुविधा प्रदान करने के लिए सरकार ने किसान मानधन योजना देश में चलाई है। इस वर्ष योजना के तहत 100 करोड़ रुपए जारी किए गए हैं।

किसान उत्पादन संगठनों (एफपीओ) का गठन और संवर्धन: योजना में छोटे व सीमांत किसान समूह बनाकर खेती कर उसका मूल्य संवर्धन कर सकते हैं। वित्त वर्ष 2022-23 के बजट में 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन हनी मिशन (एनबीएचएम): यह योजना वर्ष 2020-21 में 3 वर्षों हेतु शुरू हुई। पिछले 2 वर्षों के बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया था, पर इस वर्ष 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

कम हुआ दलहन एवं तिलहन ख़रीदने के लिए बजट: इस योजना के तहत दलहन तथा तिलहन की खरीदी के लिए बाजार हस्तक्षेप योजना और मूल्य समर्थन योजना (एमआईएस-पीएसएस) योजना देश में चलाई जा रही है। वर्ष 2022-23 के बजट हेतु 1500 करोड़ रुपये का प्रावधान हुआ है।

प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण योजना: दलहन व तिलहन की खेती को बढ़ावा देने हेतु इस वित्त वर्ष 2022-23 के लिए योजना में 1 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

फसल अवशेष प्रबंधन हेतु अनुदान: इसमें किसानों को सब्सिडी पर पराली के समुचित प्रबंधन हेतु कृषि यंत्र दिये जाते हैं, इस वर्ष बजट में कोई प्रावधान नहीं हुआ।

किसानों को ब्याज सब्सिडी: किसानों को कम ब्याज पर ऋण देने हेतु सरकार बैंकों को सब्सिडी देती है। इस वर्ष अल्पकालीन ऋण हेतु बजट में कोई पैसा जारी नहीं हुआ है।

उर्वरक पर सब्सिडी के लिए बजट: सभी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों पर केंद्र सरकार उर्वरक कंपनियों को सब्सिडी देती है। रासायनिक उर्वरक का आयात भी करती है,

ताकि किसानों को कम मूल्य पर उर्वरक मिले। वित्त वर्ष 2022-23 के लिए रासायनिक उर्वरक पर सब्सिडी के लिए 105222.32 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

पशुपालन संबंधित योजना हेतु प्रावधानः दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने व डेरी फार्म खोलने हेतु सहायता देने के लिए अलग-अलग मदों पर सब्सिडी दी जाती है। वर्ष 2022-23 हेतु राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना में 604.75 करोड़ रुपये रखे गये हैं।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजनाः इस वर्ष राष्ट्रीय पशुधन योजना हेतु बजट में 410 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

पशुधन जनगणना और एकीकृत नमूना सर्वेक्षण योजनाः इस वर्ष योजना हेतु 40 करोड़ रुपये का प्रावधान हुआ है।

मछली पालन की मुख्य योजनाओं की लिए जारी बजटः मत्स्य पालन और जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि इस योजना के तहत देश में मछुआरों के लाभ के लिए मत्स्य पालन और जलीय कृषि विकास कोष के लिए रखा जाता है। वित्त वर्ष 2022-23 में योजना के लिए 10 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। यह योजना वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2024-25 के लिए शुरू की गई है। वित्त वर्ष 2022-23 में योजना के लिए 1210 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

मत्स्य फसल बीमा योजना के तहत आवेदन फसल बीमा

पशुधन बीमा के बाद अब मछली पालन करने वालों के लिए भी सरकार ने ''मत्स्य-फसल बीमा योजना'' शुरू की है। इसके अंतर्गत मछली पालक किसान अपनी मछलियों का बीमा करा सकते हैं, जिससे मछली पालन में आकस्मिक क्षति होने पर भरपाई की जाएगी। बिहार सरकार ने राज्य के मछली पालने वाले किसानों के लिए यह योजना लेकर आई है। इस योजना के तहत एक वर्ष के अंदर मछली मरने या किसी अन्य प्रकार से नुकसानी होने पर मत्स्य पालक को भरपाई की जाएगी। इच्छुक व्यक्ति योजना का लाभ लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मत्स्य फसल-बीमा योजना के अंतर्गत मछली पालन के तहत आने वाले विभिन्न अवयवों को शामिल किया गया है। यह सभी उपयोजना इस प्रकार हैः- तालाब मात्स्यिकी से ''मत्स्य उत्पादन'' नर्सरी/रियारिंग तालाब प्रबंधन से ''मत्स्य बीज'' (फ्राई/फिंगरलिंग) का उत्पादन कार्प हैचरी संचालन हेतु ''मत्स्य प्रजनकों (ब्रूडर)'' का उत्पादन। इन तीनों योजनाओं के लिए मछली पालने वाले किसानों को कुछ प्रीमियम का भुगतान करना होगा। इन तीनों योजनाओं के लिए सभी प्रीमियम राशि पर 50 प्रतिशत की सब्सिडी दे रही है। इस योजना के तहत तीन प्रकार की योजनाओं को शामिल किया गया है। सभी के लिए बीमा राशि तय कर दी गई है। यह बीमा राशि योजना के तहत 80 प्रतिशत की नुकसानी पर दी जाएगी। योजना के तहत भरपाई के लिए घटना के 24 घंटे के अंदर लाभार्थी द्वारा जिला मत्स्य पदाधिकारी एवं कंपनी को 48 घंटे के अंदर जिला मत्स्य पदाधिकारी द्वारा कम्पनी को सूचित करना आवश्यक है। योजना बिहार के तालाब में मछली पालन करने वाले किसानों के लिए है।

इन भूमिहीन किसान मजदूरों को अब सालाना 6000 रूपये की जगह दिए जाएँगे 7000 रूपए

भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना ग्रामीण कृषि मजदूरों के लिए छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा चलाई जा रही ''राजीव गाँधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना'' के तहत पहली किश्त दे दी गई है। योजना का उद्घाटन 3 फरवरी को किया, जिसके तहत भूमिहीन किसानों से पंजीयन कराए गए थे। सरकार की माने तो योजना के तहत राज्य के 10 लाख परिवारों को योजना का लाभ मिलेगा। योजना के तहत 4 लाख 41 हजार से अधिक आवेदन आये थे, जिसे जांच के बाद 3 लाख 55 हजार परिवारों का योजना के तहत चयन हुआ है। इन सभी लाभार्थी को योजना की पहली किश्त के रूप में 71 हजार करोड़ रुपये सीधे उनके बैंक खातों में ट्रान्सफ़र किया गया है। योजना का लाभ छत्तीसगढ़ के ऐसे मूल निवासियों को दिया जायेगा, जिनके पास कृषि भूमि नहीं है। योजना के तहत बढ़ई, चरवाहा, लोहार, मोची, नाई, धोबी और पुरोहित जैसे पारंपरिक काम से जुड़े लोगों को भी शामिल किया गया है। पौनी-पसरी व्यवस्था से जुड़े परिवार, वनोपज संग्राहक तथा शासन द्वारा समय-समय पर नियत ऐसे अन्य वर्ग भी पात्र होंगे, जिनके परिवार के पास कृषि भूमि नहीं है।

□□

आयुर्वेट डेस्क

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रूकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. 1 क्या ताजा प्रसूति गाय को पशु आहार दे सकते हैं?

रामचंद्र (गाजियाबाद, उ.प्र.)

उ. 1 जी हां, ताजा प्रसूति गाय को पशु आहार दे सकते हैं, परंतु अच्छा होगा अगर आप उसे दलिया दें। प्रसूति से पहले व बाद में पशु अत्यधिक तनाव में होता है। इस समय उसे ज्यादा ऊर्जा की जरूरत होती है, ताकि वह स्वस्थ रहे। पशु आहार को पचाने के लिए ज्यादा ऊर्जा की जरूरत होती है। दलिया तो पहले ही पकाया होता है। इसलिए उसे पचाने के लिए पशु की कम ऊर्जा लगती है। इसलिए प्रसूति वाले पशु को दलिया खिलाना चाहिए। प्रसूति से डेढ़ महीने पहले व डेढ़ महीने बाद का समय पशु के लिए नाजुक/संकटपूर्ण होता है, परंतु प्रसूति से तीन हफ्ते पहले व तीन हफ्ते बाद का समय अति संवेदनशील होता है। इस समय पशु को ऊर्जा की अत्यधिक आवश्यकता होती है। इसलिए इस समय पशु को दलिया देना चाहिए, ताकि पशु को इसे पचाने में ज्यादा ऊर्जा न लगे। यह ऊर्जा पशु को स्वस्थ रखने में मदद करेगी।

प्र. 2 मेरी गाय की प्रसूति को 15 दिन हुए हैं। उसे क्या खिलाएं? रोहित, अलीगढ़

उ. इस प्रश्न का उत्तर भी उपर्युक्त उत्तर में है। आप अपने पशु को-

•पेट के कीड़ों की दवाइें दें।
•दिन में दो बार उसे दलिया खिलाएं।
•तरल कैल्शियम 100 मि.ली. प्रतिदिन दें।
•खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें।
•प्रसूति के तीन हफ्ते के बाद उसे दलिया बंद कर पशु आहार शुरू कर दें।

प्रश्न 3: आठ महीने की गाभिन गाय को क्या खिलाएं?

उ. 3. सबसे पहले तो आठ महीने की गाभिन गाय के दूध को सूखा दिया जाए। उसके बाद उसे....

•पेट के कीड़ों की दवाई दें।
•पशु आहार डेढ़ किलो सुबह व डेढ़ किलो शाम को दें।
•खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन प्रसूति तक दें।
•नौवें महीने में उसे सरसों का तेल 100 मि.ली प्रतिदिन दें।
•उसे तरल कैल्शियम बंद कर दें। इसे प्रसूति के बाद शुरू कर दें।

प्रश्न 4 मेरी गाय की प्रसूति आठ महीने पहले हुई थी। वह 12 लीटर दूध देती है। कल से उठ नहीं रही। क्या करें?

अनिल ठाकुर, पानीपत

•उ. 4 ऐसा प्रतीत होता है कि आप अपने पशु को तरल कैल्शियम नहीं देते हैं। अगर पशु दिन का पांच-छह लीटर दूध दे, तो उसे तरल कैल्शियम की आवश्यकता नहीं होती, बशर्ते आपके पास पर्याप्त हरा घास हो। परंतु अगर आपका पशु इससे अधिक दूध देता है तो उसे तरल कैल्शियम देना जरूरी है। एक लीटर दूध में लगभग 12-13 ग्राम कैल्शियम निकलता है। अधिक दूध देने वाले पशु में यह अधिक मात्रा में पशु के शरीर से निकलता है, जो पशु हरे चारे, सूखे चारे, पशु आहार से पूरा नहीं कर पाता है, इसलिए उसे बाहरी कैल्शियम की जरूरत पड़ती है। अभी आप अपने पशु को

•माइफैक्स 300ml i/v व 150 ml s/c लगवाएं।
•इंजेक्शन न्यूरोक्सिन-एम 10ml i/m प्रतिदिन पांच दिन लगवाएं।
•साथ ही उसे आयुविन वी-5 50 ग्राम प्रतिदिन दें। तरल कैल्शियम 100 ml प्रतिदिन दें। पेट के कीड़ों की दवाई दें।

□□

बजट 2022

जैविक खेती से गांव-किसान की तकदीर तय करने की कोशिश

केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को संसद में केन्द्रीय बजट 2022-23 पेश किया। वैसे तो इस बजट में अभी किसानों के लिए कोई नई योजना की शुरुआत नहीं की गई है, परंतु पहले से चली आ रही कई योजनाओं की लिए जहां बजट को बढ़ाया गया है वहीं कई योजनाओं के लिए बजट को कम किया गया है, जिसका असर इस वर्ष किसानों को योजनाओं की तहत दिए जाने वाले लाभ पर पड़ेगा। इस वर्ष देश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के तहत 124000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, जोकि पिछले वर्ष 123017.57 करोड़ रुपए था।

केंद्र वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान किसानों को ड्रोन तकनीक, रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा दिया जाएगा। कृषि और कृषक कल्याण योजनाओं का कुल बजट इस बार 1,24 लाख करोड़ रुपये रखा गया है, जो पिछले बजट की तुलना में करीब छह हजार करोड़ ज्यादा है।

कृषि क्षेत्र के लिए बजट 2022 में प्रावधान

विस्तार

एमएसपी को लेकर कोशिश इस बजट में की गई है। आय बढ़ाने और खेती की हालत सुधारने के लिए तकनीक और ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। हालांकि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदारी का लक्ष्य पिछली बार के 2.85 लाख करोड़ से कम किया गया है। सरकारी फसल खरीद की ये रकम सीधे किसानों के खाते में भेजी जाएगी।

केंद्र वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान किसानों को ड्रोन तकनीक, रसायनमुक्त प्राकृतिक खेती, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा दिया जाएगा। कृषि और कृषक कल्याण योजनाओं का कुल बजट इस बार 1,24 लाख करोड़ रुपये रखा गया है, जो पिछले बजट की तुलना में करीब छह हजार करोड़ ज्यादा है।

किसानों को बेहतर तकनीक उपलब्ध कराते हुए फसल मूल्यांकन (क्रॉप कटिंग) भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण और कीटनाशकों के छिड़काव के लिए ड्रोन तकनीक पर जोर देने के साथ ही कृषि स्टार्ट-अप और ग्रामीण उद्यमों के वित्त पोषण के लिए नाबार्ड के माध्यम से सह-निवेश मॉडल के तहत जुटाई गई मिश्रित पूंजी के साथ एक फंड की सुविधा दी जाएगी। किसानों

को डिजिटल और हाइटेक सेवाएं देने के लिए सरकार निजी एग्रोटेक और स्टार्टअप को पीपीपी मॉडल पर योजना शुरू करेगी।

2323 मोटा अनाज वर्ष घोषित

मोनोक्रॉपिंग (एक तरह की खेती) से भूजल संकट बढ़ता जा रहा है। अब किसानों को मोटे अनाज पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इससे मानव स्वास्थ्य के साथ ही मिट्टी की सेहत भी बरकरार रहे। सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोटे अनाज की घरेलू खपत को बढ़ाने के लिए उत्पादन से लेकर बिक्री तक में सहायता की जाएगी। मोटे अनाज कम पानी में पैदा हो जाते हैं, इससे उन जगहों पर बढ़ावा दिया जाएगा जहां पानी का संकट है। जिससे कि भूजल का दोहन कम हो और कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल पर भी रोक लगे।

कृषि डिजिटलीकरण पर खर्च होंगे 60 करोड़ रुपये

कृषि के डिजिटलीकरण के लिए 60 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। किसानों और कृषि संबंधी सूचनाओं को बेहतर आदान-प्रदान के लिए कृषि सूचना प्रणाली और सूचना प्रौद्योगिकी तथा राष्ट्रीय ई-गर्वनेंस योजना को सुदृढ़ और प्रोत्साहित किया जाएगा। किसानों की आय दोगुना करने के मिशन के साथ-साथ आधुनिक आईटी जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन टेक्नोलॉजी, इंटरनेट ऑफ थिंग, रोबोटिक्स आदि के उपयोग को शामिल किया जाएगा। किसानों को बेहतर तकनीक उपलब्ध कराने के साथ ही या कराते हुए भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण और कीटनाशकों के छिड़काव में ड्रोन तकनीक मदद करेंगे। माना जा रहा है कि इससे मजदूरी कम होने के साथ ही किसानों की आय भी बढ़ेगी।

खेती में स्टार्टअप पर जोर

गांव और किसान की आय बढ़ाने की दिशा में सरकार ने प्रयास को आगे बढ़ाया है। खेती में स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड नई योजनाएं लाएगा, जिसके जरिए नई मशीनें और उपकरण के स्टार्टअप शुरू किए जा सकेंगे। किसानों को भी आसानी से यह उपकरण अपने घर के आसपास उपलब्ध होंगे।

कृषि विवि के पाठ्यक्रम किए जाएंगे संशोधित

प्राकृतिक शून्य बजट खेती और जैविक खेती को बढ़ावा देकर किसानों की लागत कम करके उनकी आमदनी बढ़ाने पर भी जोर के लिए राज्यों को कृषि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को संशोधित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। किसानों की सबसे अधिक लागत हाइब्रिड बीज और रासायनिक खादों व कीटनाशकों के उपयोग पर आती है।

मत्स्य पालन को प्रोत्साहन

पशुपालन, मत्स्यपालन और डेरी मंत्रालय का बजट बढ़ाकर 2,118 करोड़ रुपये कर दिया गया है। जो मौजूदा साल में संशोधित 1407 करोड़ रुपये था।

तिलहन में आत्मनिर्भरता के लिए नया मिशन

तिलहन की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत अभी खाद्य तेलों के आयात पर निर्भर रहता है। खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनने के लिए इसकी खेती को बढ़ावा देने के लिए नया मिशन राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन (एनएमई-ओएस) को शुरू किया

जाएगा। अगले पांच वर्षों (वर्ष 2021-22 से वर्ष 2025-26) में इस मिशन के जरिए पैदावार 1676 किलोग्राम/हेक्टेयर बढ़ाकर कुल उत्पादन 54.10 मिलियन टन करने का लक्ष्य है।

खाद्य तेलों की जरूरत पूरी करने के लिए भारत कच्चे पॉम ऑयल के लिए आयात पर निर्भर रहता है। अंतरराष्ट्रीय तेल की कीमतें घरेलू कीमतों को प्रभावित करती हैं। नई योजना के तहत पॉम ऑयल की खेती के लिए किसानों में विश्वास पैदा किया जाएगा।

आयात निर्भरता 20 फीसदी घटना का रखा लक्ष्य

तिलहन के लिए 3.5 मिलियन हेक्टेयर अतिरिक्त रकबा (28.7 मिलियन हेक्टेयर से 32.3 मिलियन हेक्टेयर) बढ़ाया जाएगा। इससे खाद्य तेलों के आयात पर निर्भरता 52 फीसदी से घटकर 32 फीसदी करने का लक्ष्य है। तिलहनी फसलों को बढ़ावा देने

के लिए 600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसके अंतर्गत अधिक धान उत्पादन से बंजर भूमि, अंतर फसलें, गैर पारंपरिक राज्यों में सरसों और सोयाबीन मिशन तथा फसल विविधीकरण के जरिए बढ़ावा दिया जाएगा।

किसानों को कम समय के कर्ज के लिए 19500 करोड़ रुपये रखे गए इस बार

किसानों को कम समय के लिए कर्ज उपलब्ध कराने के लिए बैंकों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। संशोधित ब्याज सबवेंशन योजना के अंतर्गत कृषि एवं इससे संबंधित गतिविधियों में लगे किसानों को कम समय के लिए नौ फीसदी की दर से अल्पकालीक ऋण उपलब्ध कराया जाता है। इसमें भारत सरकार दो फीसदी की छूट देती है। कर्ज का जल्द और समय पर भुगतान करने पर तीन फीसदी और छूट दी जाती है। इससे

किसानों को 4 फीसदी का ब्याज देना होता है। इसके लिए 19,500 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

फसल अवशेष प्रबंधन: प्रदूषण कम होगा, आय बढ़ाने में मिलेगी मदद

फसल अवशेषों को जलाने से होने वाले प्रदूषण का मुद्दा बड़ी समस्या है। किसानों को फसल अवशेषों से बायोमास ईंधन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके लिए देश के बड़े थर्मल पावर प्लांट में बिजली बनाने के लिए उपयोग होने वाले कोयले में 5-7 फीसदी बायोमास ईंधन मिलाया जाएगा। इससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी। साथ ही ग्रामीणों को रोजगार मिलेगा। इससे 38 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड का कम उत्सर्जन होगा। □□

आयुर्वेट डेस्क

कैलधन वी

कैल्शियम, फॉस्फोरस के साथ विटामिन डी$_3$ व बी$_{12}$ का पशु खुराक मिश्रण

AYURVET™

अधिक दूध एवम् अधिक धन का मूलमंत्र

विशेषताएं

- दुधारु पशुओं में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाए
- पशु के शारीरिक विकास में मदद करे
- मांसपेशियों को ताकत दे एवम् संकुचन में सहायक
- हिलाने की आवश्यकता नहीं है

पैक

6 लीटर 2 लीटर 1 लीटर

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट लिमिटेड

101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3,
सैक्टर-14, कौशाम्बी, गाजियाबाद -201010(उ.प्र.)

दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 91-120-7100202

कटड़ों में अम्ब्लिकल हेर्निया या नाभि हेर्निया

-वैभव भारद्वाज एवं गौरव कुमार

बच्चे के पेट का वो भाग जो मां से जुडा होता है (नाभि), उसकी मांसपेशियां कमज़ोर रह जाती हैं, जिसकी वजह से वहां बच्चे के जन्म के बाद से ही सूजन दिखने लगती है। इसे अम्ब्लिकल हर्निया या नाल हर्निया या नाभि हर्निया कहते है। इस सूजन में भीतर के अंग जैसे कि आंत होती है। जन्म के समय यह सूजन कम होती है, परंतु जैसे जैसे कटडा बड़ा होता है यह सूजन बढ़ने लगती है।

अम्ब्लिकल हर्निया कटड़ों में आमतौर पर पाया जाता है। यह एक जन्मजात बीमारी होती है। बच्चे के पेट का वो भाग जो मां से जुड़ा होता है (नाभि), उसकी मांसपेशियां कमज़ोर रह जाती हैं, जिसकी वजह से वहां बच्चे के जन्म के बाद से ही सूजन दिखने लगती है। इसे अम्ब्लिकल हर्निया या नाल हर्निया या नाभि हर्निया कहते है। इस सूजन में भीतर के अंग जैसे कि आंत होती है। जन्म के समय यह सूजन कम होती है, परंतु जैसे जैसे कटड़ा बड़ा होता है यह सूजन बढ़ने लगती है।

अम्ब्लिकल हर्निया का कैसे पता लगाये

- पेट के निचले हिस्से में सूजन होना।
- समय के साथ सूजन का बढ़ना।
- हाथ से दबाने पर सूजन खत्म हो जाना और हाथ हटने पर सूजन फिर से आ जाना।
- कभी कभी सूजन वाले हिस्से मे दर्द होना।

अम्ब्लिकल हर्निया का उपचार

आमतौर पर हर्निया का इलाज ऑपरेशन से ही मुमकिन होता है, जो एक पशु चिकित्सक द्वारा ही किया जाता है। जन्म के शुरुआती दिनों में इसका इलाज आसान होता है, क्योंकि तब कटड़े का वजन कम होता है, परंतु जैसे-जैसे कटड़ा बड़ा होता है उसके पेट का आकार भी बढ़ने लगता है और उस हिस्से पर ज्यादा वज़न पड़ने लगता है। इसकी वजह से ऑपरेशन के बाद ज्यादा समस्या आती है। इसके उपचार में पशु चिकित्सक सूजन वाले हिस्से में एक चीरा लगाता है और अंदरुनी अंग जैसे कि आंत को वापिस पेट मे डाल देता है और मांसपेशियों को सिल देता है। उसके बाद बाहर की ख़ाल को भी सिल देता है। इससे सूजन ख़त्म हो जाती है।

ऑपरेशन के बाद रखे जाने वाली सावधानियां

- कटड़े को ऑपरेशन के बाद दो-तीन हफ्तों तक कम दूध पिलाना या कम चारा देना चाहिये।
- जख्म पर रोज दिन में दो-तीन बार दवाई लगाना चाहिये और मक्खी भगाने का स्प्रे लगाना चाहिये।
- जख्म को मिट्टी, पानी, गोबर और पेशाब से बचाना चाहिये।
- ऑपरेशन के 12-14 दिनों बाद ख़ाल के टांके कटवाने चाहिये।
- अगर ऑपरेशन वाली जगह पर राद पड़ जाये या कीड़े पड़ जाये, तो तुरंत पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

□□

-पशु शल्य चिकित्सा एवं विविकरण विभाग,
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय,
हिसार-125004 (हरियाणा)

21 मार्च : विश्व वानिकी दिवस

विश्व वानिकी दिवस प्रतिवर्ष 21 मार्च को मनाया जाता है। पहला विश्व वानिकी दिवस सन् 1971 ई . में मनाया गया था। विश्व वानिकी दिवस इस उद्देश्य से मनाया जाता है कि विश्व के सभी देश अपनी वन-सम्पदा की तरफ ध्यान दें और वनों को संरक्षण प्रदान करे।

विश्व वानिकी दिवस प्रतिवर्ष 21 मार्च को मनाया जाता है। पहला विश्व वानिकी दिवस सन् 1971 ई . में मनाया गया था। विश्व वानिकी दिवस इस उद्देश्य से मनाया जाता है कि विश्व के सभी देश अपनी वन-सम्पदा की तरफ ध्यान दें और वनों को संरक्षण प्रदान करे।

हमारे देश भारत में भी वन-सम्पदा पर्याप्त रूप से है। भारत में 657.6 लाख हेक्टेयर भूमि (22.7 प्रतिशत) पर वन पाए जाते हैं, जबकि एक नए अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में भारत में 19.39 प्रतिशत भूमि पर वनों का विस्तार है और छत्तीसगढ़ राज्य में सबसे ज्यादा वन-सम्पदा है उसके बाद क्रमश मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्य में। भारत सरकार द्वारा सन् 1952 ई . में निर्धारित 'राष्ट्रीय वन नीति' के तहत हमारे देश के 33.3 प्रतिशत क्षेत्र पर वन होने चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में ऐसा है नहीं। धीरे-धीरे हमारे वन नष्ट होते जा रहे हैं। वन-भूमि पर उद्योग-धंधे तथा मकानों का निर्माण, वनों को खेती के काम में लाना और लकड़ियों की बढ़ती माँग के कारण वनों की अवैध कटाई आदि वनों के नष्ट होने के प्रमुख कारण हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि हम अपने देश की 'राष्ट्रीय निधि' को बचाए और इनका संरक्षण करे। हमें वृक्षारोपण (पेड़-पौधे लगाना) को बढ़ावा देना चाहिए। इसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध पर्यावरणविद डॉ. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कहा था कि -'वृक्षों का अर्थ है जल, जल का अर्थ है रोटी और रोटी ही जीवन है।'

22 मार्च : विश्व जल संरक्षण दिवस

22 मार्च यानि विश्व जल संरक्षण दिवस। प्रत्येक वर्ष, पूरा विश्व और जल संरक्षण के प्रति जागरुकता...इन तीन आधारभूत बिंदुओं पर जल संरक्षण की दिवस की नींव है, लेकिन शायद यह नींव उतनी भी मजबूत नहीं है। पानी का व्यर्थ बहाव इस बात की ओर इशारा करता है।

पूरा विश्व जल संरक्षण के मुद्दे पर एकजुट है, क्योंकि जल ही जीवन है और यह जीवन जीने के लिए बुनियादी आवश्यकता है। लेकिन इसके बावजूद पानी का व्यर्थ बहाव, इस ओर इशारा करता है कि हम अब भी उसके असली महत्व को समझ नहीं पाए हैं। प्रतिवर्ष जल संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में पानी बचाओ अभियान से जुड़े विभिन्न जागरुकता कार्यक्रम और अन्य गतिविधियां की जाती है।

विश्व जल संरक्षण दिवस मनाने की शुरुआत 1993 में संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा द्वारा हुई, जब सभा में इस दिन को वार्षिक कार्यक्रम के रुप में मनाए जाने की घोषणा की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य समाज में जल की आवश्यकता, उसके महत्व और संरक्षण के प्रति जागरुकता पैदा करना था। इसके बाद 22 मार्च का दिन तय तक इसे विश्व जल संरक्षण के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया गया, जो आज तक पूरे विश्व में मनाया जाता है।

हालांकि इससे पहले 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की अनुसूची 21 में इसे आधिकारिक रूप से शामिल किया गया था। लेकिन बाद में 1993 से ही इसे एक उत्सव के तौर पर मनाया गया।

जल संरक्षण दिवस, जल के संरक्षण के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए सांकेतिक उपलक्ष्य है, परंतु यह तभी सार्थक हो सकता है जब हम जल के संरक्षण का असली महत्व समझकर उसे अपने जीवन में शामिल करें और उसके प्रति कृतज्ञ रहें।

□□

सोने के अंडे जितना है भाव अभी शुरू करें कड़कनाथ मुर्गे का व्यवसाय

जैसा की बजट 2022 में स्टार्टअप्स पर ज़ोर दिया गया है, ऐसे में देश के कई लोग हैं, जो अपना बिज़नेस खोलना चाहते हैं. उनकी जानकारी के लिए बता दें कि कड़कनाथ फार्मिंग एक बहुत ही लाभदायक कृषि व्यवसाय है। जी हां, कड़कनाथ अंडा उत्पादन व्यवसाय और कड़कनाथ चिकन उत्पादन व्यवसाय दोनों ही बहुत अच्छे और कम निवेश वाले स्टार्ट-अप हैं।

पिछले कुछ दशकों में पोल्ट्री उद्योग में जबरदस्त विकास हुआ है। भारत में देशी मुर्गियों की 19 नस्लें हैं, उसमें से कड़कनाथ चिकन एक है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि यह सिर्फ व्यवसाय नहीं कई लोगों की रोजी-रोटी का जरिया भी है। दरअसल, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं को छूने वाले विशिष्ट ग्रामीण परिवारों का एक हिस्सा है।

कड़कनाथ मुर्गे की मुख्य विशेषताएं

- कड़कनाथ भारत में महत्वपूर्ण देशी मुर्गी की एक नस्ल है।
- इसे हिंदी में कलामाशी के नाम से भी जाना जाता है और यह अपने काले रंग के मांस के लिए लोकप्रिय है, जिसे ब्लैक मीट चिकन भी कहा जाता है।
- कड़कनाथ भारत की दुर्लभ कुक्कुट नस्लों में से एक है, जो मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के मूल निवासी हैं।
- कड़कनाथ मुर्गे की नस्ल अपने मांस की गुणवत्ता, बनावट और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।
- कड़कनाथ मुर्गे का मांस काले रंग का होता है और अंडे भूरे रंग के होते हैं।
- ब्लैक मीट चिकन की मांग दिन-ब-दिन बढ़ रही है और अपने उत्कृष्ट औषधीय गुणों के कारण अधिकांश भारतीय राज्यों में फैल गई है।
- विशेष रूप से ये पक्षी होम्योपैथी में महान औषधीय महत्व रखते हैं और एक विशेष तंत्रिका विकार के इलाज में उपयोगी होते हैं।
- कड़कनाथ मुर्गी पालन का व्यावसायिक स्तर विशेष रूप से केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु राज्यों में है।

ब्लैक मीट चिकन की नस्लें

भारत में कुक्कुट पालन एक विशाल उद्योग है और इसे मुख्य रूप से परत और ब्रायलर खेती में वगीकृत किया गया है, जो अंडा और मांस उत्पादन करता है। ब्लैक मीट चिकन की कई अलग-अलग नस्लें दुनिया भर में फैली हुई हैं।

- कड़कनाथ - मूलनिवासी : भारत
- सिल्कियर - मूलनिवासी : चीन
- अय्यम सेमानी - मूलनिवासी : इंडोनेशिया

कड़कनाथ मुर्गे की इतनी डिमांड क्यों

कड़कनाथ एक कठोर नस्ल है, इसलिए यह सभी जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल है और इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक है। अपने विशिष्ट स्वाद और बनावट के लिए इसके मांस की अत्यधिक सराहना की जाती है। इस नस्ल का मांस काले रंग का होता है और माना जाता है कि इसका बेहतरीन औषधीय महत्व है। इसलिए यह आदिवासियों के बीच बहुत लोकप्रिय है। लोग इन पक्षियों का उपयोग भगवान को भक्ति प्रसाद के लिए भी करते हैं।

कड़कनाथ मुर्गे के पोषक व औषधीय गुण

- कड़कनाथ प्रोटीन सामग्री से भरपूर होता है।
- अन्य नस्लों के मुर्गे में प्रोटीन 18 से 20 प्रतिशत जबकि कड़कनाथ में 25 प्रतिशत अधिक होता है।

- शोध के अनुसार कड़कनाथ में कोलेस्ट्रॉल 73 से 1.37 प्रतिशत कम होता है, जबकि ब्रायलर चिकन में 13 से 25 प्रतिशत होता है।
- कड़कनाथ अमीनो एसिड से भरपूर होता है।
- कड़कनाथ में खनिज हैं नियासिन, प्रोटीन, वसा, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, निकोटिनिक एसिड आदि और विटामिन बी 1, बी 2, बी 6, बी 12, सी और ई हैं।
- कड़कनाथ मुर्गे के मांस का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए करते हैं।
- कड़कनाथ के रक्त का उपयोग जनजातियों द्वारा पुरानी बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।
- इसके मांस का उपयोग पुरुष में जोश भरने के लिए किया जाता है।
- माना जाता है कि कड़कनाथ महिलाओं के लिए कुछ विशेष बीमारियों जैसे कि आदतन गर्भपात, बांझपन, असामान्य मासिक धर्म को ठीक करने में मदद करता है।

कड़कनाथ के अंडे

- इसके अंडे वृद्ध लोगों और बढ़ते बच्चों के लिए अच्छे होते हैं, क्योंकि यह अमीनो एसिड से भरपूर और कोलेस्ट्रॉल में कम होता है।
- कड़कनाथ के अंडे माइग्रेन, जन्म देने के बाद होने वाले सिरदर्द, गुर्दे की तीव्र या पुरानी सूजन, अस्थमा आदि के इलाज में मदद करते हैं।

कड़कनाथ मुर्गे की कीमत

भारत में कड़कनाथ मुर्गे का रेट 2,000 रूपए से 2,500 रुपए है और ब्लैक मीट चिकन की कीमत 1000 रुपए प्रति किलोग्राम है।

कैसे करें कड़कनाथ मुर्गे का पालन

कड़कनाथ मुर्गों का पालन भी आम मुर्गों की तरह ही किया जा सकता है। इनके खान-पान में भी ज्यादा खर्च नहीं आता है और ये हरा चारा, बरसीम, बाजरा आदि खाकर तेजी से बढ़ते हैं। मुर्गी पालन के लिए इसके चूजों के लिए किसी मुर्गीपालन करने वाले किसान से या फिर जिले में स्थित कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। कड़कनाथ मुर्गी पालन फार्म गांव या शहर से थोड़ी दूरी पर होना बेहतर होता है। कृषि विज्ञान केंद्र या किसी पोल्ट्री फार्म से इनके पालन की ट्रेनिंग ली जा सकती है। पोल्ट्री फार्म में रोशनी और पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो और फार्म में पानी का जमाव नहीं होना चाहिए।

सरकार भी लोगों को मुर्गी पालन के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके लिए मध्य प्रदेश सरकार ने कड़कनाथ मुर्गी पालन योजना शुरू भी की है। इस योजना के तहत सरकार जरूरतमंदों को 40 चूजों के पालन के लिए 4400 रुपए का अनुदान देती है। संबंधित जिले के पशु चिकित्सा अधिकारी या कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क कर इस योजना का लाभ लिया जा सकता है।

इसके अलावा केंद्र सरकार सभी राज्यों में नेशनल लाइव स्टॉक मिशन और नाबार्ड के तहत भी योजनाएं चलाती है। इनमें सरकार सब्सिडी की सुविधा भी देती है।

□□

आयुर्वेट डेस्क

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

पशु स्वास्थ्य सेवा उद्योग में सफलता के 30 वर्ष

AYURVET

30 YEARS

आयुर्वेट लिमिटेड

पशु स्वास्थ्य व उत्पादन में लाभदायक एवं वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित उत्पाद

आ यु वें ट

आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान